विभागीय हिन्दी पत्रिका

कुरजां

तृतीय अंक

जून 2026

क्षेत्रीय क्षमता निर्माण एवं ज्ञान संस्थान

ए. जी. कॉलोनी , बजाज नगर, जयपुर

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

कुरजां परिवार

मुख्य संरक्षक

श्री प्रवीन्द्र यादव (महानिदेशक)

संपादक मंडल

श्री सुरेंद्र कुमार जैन
वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी

श्री राजेश कुमार माहेश्वरी
वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी

संपादन सहयोग

सुश्री अदिति शर्मा
यंग प्रोफेशनल

श्री राजेन्द्र प्रसाद मीना
सहायक प्रशासनिक अधिकारी

श्री दीपक भारद्वाज
यंग प्रोफेशनल

रचनाकारों के विचारों से संपादक मंडल का सहमत होना आवश्यक नहीं है। रचनाओं की मौलिकता के लिए रचनाकार स्वयं उत्तरदायी होंगे। -संपादक मंडल

अनुक्रमणिका

माननीय गृह मंत्री जी का संदेश.....3
महानिदेशक महोदय का संदेश.....5
संपादक की कलम से.....3
जयपुर: इतिहास एवं प्रमुख पर्यटक स्थल.....4
अरावली की गोद में भक्ति का वास: "खोले के हनुमान जी".....7
मस्तिष्क की नकल: न्यूरल नेटवर्क से जुड़ी दुनिया.....10
अगर ए.आई. इंसान बन जाए तो ?.....13
नववर्ष का द्वन्द्व.....18
भारत के राज्य और राजधानियाँ एक कविता के माध्यम से.....20
ठन-ठन गोपाल या निवेश बेमिसाल?.....26
फाइल नंबर 786 की आत्मकथा.....29
व्यंग्य लेख: हर घर तेंदुआ दर्शन योजना.....37
स्टेटस अपडेट.....42
नेट ज़ीरो और पर्यावरण संरक्षण.....46
नवभारत की नवदिशा: विकास, चुनौतियाँ और योजना.....50
कार्यालय गतिविधियों की झलकियाँ

अमित शाह
गृह मंत्री एवं सहकारिता मंत्री
भारत सरकार

सत्यमेव जयते

प्रिय देशवासियो !

आप सभी को हिंदी दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ।

भारत मूलतः भाषा–प्रधान देश है। हमारी भाषाएँ सदियों से संस्कृति, इतिहास, परंपराओं, ज्ञान–विज्ञान, दर्शन और अध्यात्म को पीढ़ी दर पीढ़ी आगे बढ़ाने का सशक्त माध्यम रही हैं। हिमालय की ऊँचाइयों से लेकर दक्षिण के विशाल समुद्र तटों तक, मरुभूमि से लेकर बीहड़ जंगलों और गाँव की चौपालों तक, भाषाओं ने हर परिस्थिति में मनुष्य को संवाद और अभिव्यक्ति के माध्यम से संगठित रहने और एकजुट होकर आगे बढ़ने का मार्ग दिखाया है।

मिलकर चलो, मिलकर सोचो और मिलकर बोलो, यही हमारी भाषाई और सांस्कृतिक चेतना का मूल मंत्र रहा है।

भारत की भाषाओं की सबसे बड़ी विशेषता यही रही है कि उन्होंने हर वर्ग और समुदाय को अभिव्यक्ति का अवसर दिया। पूर्वोत्तर में बीहू का गान, तमिलनाडु में ओवियालू की आवाज, पंजाब में लोहड़ी के गीत, बिहार में विद्यापति की पदावली, बंगाल में बाउल संत के भजन, आदिम समाज में ढोल–मांदर की थाप पर करमा की गूँज, माताओं की लोरियाँ, किसानों का बारहमासा, कजरी गीत, भिखारी ठाकुर की 'बिदेशिया', इन सबने हमारी संस्कृति को जीवन्त और लोककल्याणकारी बनाया है।

मेरा स्पष्ट मानना है कि भारतीय भाषाएँ एक दूसरे की सहचर बनकर, एकता के सूत्र में बंधकर आगे बढ़ रही हैं। संत तिरुवल्लुवर को जितनी भावुकता से दक्षिण में गाया जाता है, उतनी ही रुचि से उत्तर में भी पढ़ा जाता है। कृष्णदेवराय जितने लोकप्रिय दक्षिण में हुए, उतने ही उत्तर में भी। सुब्रमण्यम भारती की राष्ट्रप्रेम से ओत–प्रोत रचनाएँ हर क्षेत्र के युवाओं में राष्ट्रप्रेम को प्रबल बनाती हैं। गोस्वामी तुलसीदास को हर एक देशवासी पूजता है, संत कबीर के दोहे तमिल, कन्नड़ और मलयालम अनुवादों में पाए जाते रहे हैं। सूरदास की पदावली दक्षिण भारत के मंदिरों और संगीत परंपरा में आज भी प्रचलित है। श्रीमंत शंकरदेव, महापुरुष माधवदेव को हर एक वैष्णव जानता है। और, भूपेन हजारिका को हरियाणा का युवा भी गुनगुनाता है।

गुलामी के कठिन दौर में भी भारतीय भाषाएँ प्रतिरोध की आवाज बनीं और आज़ादी के आंदोलन को राष्ट्रव्यापी बनाने में भूमिका निभाई। हमारे स्वाधीनता सेनानियों ने जनपदों की भाषाओं में, गाँव–देहात की भाषा में लोगों को आज़ादी के आंदोलन से जोड़ा। हिंदी के साथ ही सभी भारतीय भाषाओं के कवियों, साहित्यकारों और नाटककारों ने लोकभाषाओं, लोककथाओं, लोकगीतों और लोकनाटकों के माध्यम से हर आयु, वर्ग और समाज के भीतर स्वाधीनता के संकल्प को प्रबल बनाया। वन्दे मातरम् और जय हिंद जैसे नारे हमारी भाषाई चेतना से ही उपजे और स्वतंत्र भारत के स्वाभिमान के प्रतीक बने।

जब देश आजाद हुआ, तब हमारे संविधान निर्माताओं ने भाषाओं की क्षमता और महत्ता को देखते हुए

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

इस पर विस्तार से विचार–विमर्श किया और 14 सितम्बर 1949 को देवनागरी लिपि में लिखित हिंदी को राजभाषा के रूप में अंगीकृत किया। संविधान के अनुच्छेद 351 में यह दायित्व सौंपा गया कि हिंदी का प्रचार–प्रसार हो और वह भारत की सामासिक संस्कृति का प्रभावी माध्यम बने।

पिछले एक दशक में प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में भारतीय भाषाओं और संस्कृति के पुनर्जागरण का एक स्वर्णिम कालखंड आया है। चाहे संयुक्त राष्ट्रसंघ का मंच हो, जी–20 का सम्मेलन या SCO में संबोधन, मोदी जी ने हिंदी और भारतीय भाषाओं में संवाद कर भारतीय भाषाओं का स्वाभिमान बढ़ाया है।

मोदी जी ने आजादी के अमृत काल में गुलामी के प्रतीकों से देश को मुक्त करने के जो पंच प्रण लिए थे, उसमें भाषाओं की बड़ी भूमिका है। हमें अपनी संवाद और आपसी संपर्क भाषा के रूप में भारतीय भाषा को अपनाना चाहिए, न कि किसी विदेशी भाषा को। तभी हम गुलामी की मानसिकता से पूरी तरह मुक्त हो पाएँगे।

राजभाषा हिंदी ने 76 गौरवशाली वर्ष पूरे किए हैं। राजभाषा विभाग ने अपनी स्थापना के स्वर्णिम 50 वर्ष पूर्ण कर हिंदी को जनभाषा और जनचेतना की भाषा बनाने का अद्भुत कार्य किया है। 2014 के बाद से सरकारी कामकाज में हिंदी के प्रयोग को निरंतर बढ़ावा दिया गया है। संसदीय राजभाषा समिति ने वर्ष 1976 में अपनी स्थापना से लेकर 2014 तक माननीय राष्ट्रपति महोदया को प्रतिवेदन के 9 खंड प्रस्तुत किए थे, वहीं 2019 से अब तक 3 खंड प्रस्तुत किए जा चुके हैं। 13–14 नवम्बर 2021 को वाराणसी से प्रारंभ हुए अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलनों की परम्परा भी लगातार आगे बढ़ रही है।

सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में भी राजभाषा विभाग ने उल्लेखनीय उपलब्धियाँ हासिल की हैं। न्यूरल मशीन ट्रांसलेशन पर आधारित 'कंठस्थ 2.0' में आज 5 करोड़ से अधिक वाक्यों का ग्लोबल डाटाबेस उपलब्ध है। 'लीला राजभाषा' और 'लीला प्रवाह' जैसे शिक्षण पैकेजों के माध्यम से 14 भारतीय भाषाओं में हिंदी सीखने की सुविधा उपलब्ध कराई गई है। वर्ष 2022 में शुरू हुआ 'हिंदी शब्द सिंधु' अब तक लगभग 7 लाख शब्दों से समृद्ध हो चुका है।

2024 में हिंदी दिवस पर 'भारतीय भाषा अनुभाग' की स्थापना की गई, जिसका उद्देश्य सभी प्रमुख भारतीय भाषाओं के बीच सहज अनुवाद सुनिश्चित करना है। हमारा लक्ष्य यह है कि हिंदी और अन्य भारतीय भाषाएँ केवल संवाद का माध्यम न रहकर तकनीक, विज्ञान, न्याय, शिक्षा और प्रशासन की धुरी बनें। डिजिटल इंडिया, ई–गवर्नेंस, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और मशीन लर्निंग के इस युग में हम भारतीय भाषाओं को भविष्य के लिए सक्षम, प्रासंगिक और वैश्विक तकनीकी प्रतिस्पर्धा में भारत को अग्रणी बनाने वाली शक्ति के रूप में विकसित कर रहे हैं।

मित्रों, भाषा सावन की उस बूँद की तरह है, जो मन के दुःख और अवसाद को धोकर नई ऊर्जा और जीवन शक्ति देती है। बच्चों की कल्पना से गढ़ी गई अनोखी कहानियों से लेकर दादी–नानी की लोरियों और किस्सों तक, भारतीय भाषाओं ने हमेशा समाज को जिजीविषा और आत्मबल का मंत्र दिया है।

मिथिला के कवि विद्यापति जी ने ठीक ही कहा है:
"देसिल बयना सब जन मिट्ठा।"
अर्थात् अपनी भाषा सबसे मधुर होती है।

आइए, इस हिंदी दिवस पर हम हिंदी सहित सभी भारतीय भाषाओं का सम्मान करने और उन्हें साथ लेकर आत्मनिर्भर, आत्मविश्वासी तथा विकसित भारत की दिशा में आगे बढ़ने का संकल्प लें।

आप सभी को एक बार फिर से हिंदी दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ।

वंदे मातरम्।

नई दिल्ली
14 सितंबर, 2025

(अमित शाह)

इस पर विस्तार से विचार–विमर्श किया और 14 सितम्बर 1949 को देवनागरी लिपि में लिखित हिंदी को राजभाषा के रूप में अंगीकृत किया। संविधान के अनुच्छेद 351 में यह दायित्व सौंपा गया कि हिंदी का प्रचार–प्रसार हो और वह भारत की सामासिक संस्कृति का प्रभावी माध्यम बने।

पिछले एक दशक में प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में भारतीय भाषाओं और संस्कृति के पुनर्जागरण का एक स्वर्णिम कालखंड आया है। चाहे संयुक्त राष्ट्रसंघ का मंच हो, जी–20 का सम्मेलन या SCO में संबोधन, मोदी जी ने हिंदी और भारतीय भाषाओं में संवाद कर भारतीय भाषाओं का स्वाभिमान बढ़ाया है।

मोदी जी ने आजादी के अमृत काल में गुलामी के प्रतीकों से देश को मुक्त करने के जो पंच प्रण लिए थे, उसमें भाषाओं की बड़ी भूमिका है। हमें अपनी संवाद और आपसी संपर्क भाषा के रूप में भारतीय भाषा को अपनाना चाहिए, न कि किसी विदेशी भाषा को। तभी हम गुलामी की मानसिकता से पूरी तरह मुक्त हो पाएँगे।

राजभाषा हिंदी ने 76 गौरवशाली वर्ष पूरे किए हैं। राजभाषा विभाग ने अपनी स्थापना के स्वर्णिम 50 वर्ष पूर्ण कर हिंदी को जनभाषा और जनचेतना की भाषा बनाने का अद्भुत कार्य किया है। 2014 के बाद से सरकारी कामकाज में हिंदी के प्रयोग को निरंतर बढ़ावा दिया गया है। संसदीय राजभाषा समिति ने वर्ष 1976 में अपनी स्थापना से लेकर 2014 तक माननीय राष्ट्रपति महोदया को प्रतिवेदन के 9 खंड प्रस्तुत किए थे, वहीं 2019 से अब तक 3 खंड प्रस्तुत किए जा चुके हैं। 13–14 नवम्बर 2021 को वाराणसी से प्रारंभ हुए अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलनों की परम्परा भी लगातार आगे बढ़ रही है।

सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में भी राजभाषा विभाग ने उल्लेखनीय उपलब्धियाँ हासिल की हैं। न्यूरल मशीन ट्रांसलेशन पर आधारित 'कंठस्थ 2.0' में आज 5 करोड़ से अधिक वाक्यों का ग्लोबल डाटाबेस उपलब्ध है। 'लीला राजभाषा' और 'लीला प्रवाह' जैसे शिक्षण पैकेजों के माध्यम से 14 भारतीय भाषाओं में हिंदी सीखने की सुविधा उपलब्ध कराई गई है। वर्ष 2022 में शुरू हुआ 'हिंदी शब्द सिंधु' अब तक लगभग 7 लाख शब्दों से समृद्ध हो चुका है।

2024 में हिंदी दिवस पर 'भारतीय भाषा अनुभाग' की स्थापना की गई, जिसका उद्देश्य सभी प्रमुख भारतीय भाषाओं के बीच सहज अनुवाद सुनिश्चित करना है। हमारा लक्ष्य यह है कि हिंदी और अन्य भारतीय भाषाएँ केवल संवाद का माध्यम न रहकर तकनीक, विज्ञान, न्याय, शिक्षा और प्रशासन की धुरी बनें। डिजिटल इंडिया, ई–गवर्नेंस, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और मशीन लर्निंग के इस युग में हम भारतीय भाषाओं को भविष्य के लिए सक्षम, प्रासंगिक और वैश्विक तकनीकी प्रतिस्पर्धा में भारत को अग्रणी बनाने वाली शक्ति के रूप में विकसित कर रहे हैं।

मित्रों, भाषा सावन की उस बूँद की तरह है, जो मन के दुःख और अवसाद को धोकर नई ऊर्जा और जीवन शक्ति देती है। बच्चों की कल्पना से गढ़ी गई अनोखी कहानियों से लेकर दादी–नानी की लोरियों और किस्सों तक, भारतीय भाषाओं ने हमेशा समाज को जिजीविषा और आत्मबल का मंत्र दिया है।

मिथिला के कवि विद्यापति जी ने ठीक ही कहा है:
"देसिल बयना सब जन मिट्ठा।"
अर्थात् अपनी भाषा सबसे मधुर होती है।

आइए, इस हिंदी दिवस पर हम हिंदी सहित सभी भारतीय भाषाओं का सम्मान करने और उन्हें साथ लेकर आत्मनिर्भर, आत्मविश्वासी तथा विकसित भारत की दिशा में आगे बढ़ने का संकल्प लें।

आप सभी को एक बार फिर से हिंदी दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ।

वंदे मातरम्।

नई दिल्ली
14 सितंबर, 2025

(अमित शाह)

महानिदेशक महोदय का संदेश

विभागीय हिन्दी ई-पत्रिका "कुरजां" के तीसरे अंक के प्रकाशन से मुझे अत्यन्त प्रसन्नता हुई है । मेरा मानना है कि, हिन्दी ई-पत्रिका "कुरजां" का निरंतर प्रकाशन राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार में सहायक सिद्ध होने के साथ-साथ, हिन्दी भाषा के प्रति एक सकारात्मक सोच को भी परिलक्षित कर रहा है ।

विभागीय हिन्दी ई-पत्रिका "कुरजां" के विगत अंकों मे सम्मिलित की गईं विभिन्न रचनाओं को अनेक कार्यालयों द्वारा सराहा गया है । आपकी इन सकारात्मक प्रतिक्रियाओं ने "कुरजां" परिवार में एक नई ऊर्जा और उत्साह का संचार किया है ।

यह संस्थान दैनिक कार्यालयीन कार्य-कलापों में हिन्दी के प्रयोग के उच्च मानक स्थापित करने मे सदैव तत्पर रहा है । "कुरजां" के प्रकाशन में भी संस्थान के कर्मचारियों/अधिकारियों ने अपनी अपनी रचनाओं के रूप में सराहनीय योगदान किया गया है ।

मैं हिंदी गृह पत्रिका के कुरजां के सफल ई-प्रकाशन हेतु संपादक मंडल एवं सभी रचनाकारों को हार्दिक बधाई एवं अपनी शुभकामनाएं अभिव्यक्त करता हूँ ।

प्रवीन्द्र यादव

संपादक की कलम से

आप सबके समक्ष हमारे संस्थान की हिन्दी ई-पत्रिका "कुरजां" के तीसरे अंक को प्रस्तुत करते हुए अत्यन्त प्रसन्नता हो रही है । "कुरजां" का प्रकाशन न केवल राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार में सहायक सिद्ध हो रहा है, वरन् यह रचनाकारों द्वारा उनके विचारों और भावों को अभिव्यक्त करने का एक सशक्त माध्यम भी बन गया है ।

"कुरजां" के विगत अंकों मे सम्मिलित विभिन्न रचनाओं को मिली आपका प्रशंसा संबंधित रचनाकारों को सूचित कर दी गई है । पाठकों की सकारात्मक प्रतिक्रियाओं से न केवल हमारा बल्कि सभी रचनाकारों का उत्साह वर्धन हुआ है ।

हम अपने पाठकों से विनम्र अनुरोध करते हैं कि वे "कुरजां" के प्रकाशन के संबंध में अपने बहुमूल्य सुझाव एवं प्रतिक्रियाएँ अवश्य साझा करें, ताकि भविष्य में पत्रिका की विषयवस्तु, प्रस्तुति और गुणवत्ता को और अधिक समृद्ध एवं प्रभावशाली बनाया जा सके। आपके सुझाव हमें "कुरजां" को नई ऊँचाइयों तक पहुँचाने के लिए प्रेरित करेंगे।

मैं सभी रचनाकारों, संपादकीय समिति के सदस्यों तथा सहयोगी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को हार्दिक बधाई देता हूँ, जिनके अथक प्रयासों से यह तीसरा अंक संभव हो पाया है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि "कुरजां" का यह अंक हिंदी के प्रचार-प्रसार तथा कार्यालयीन कार्यों में इसके प्रभावी और व्यावहारिक उपयोग को नई दिशा प्रदान करेगा।

सुरेंद्र कुमार जैन

उपलब्धियों की उड़ान

संस्थान को वर्ष 2024-25 हेतु सीएजी द्वारा "ऑफिस ऑफ द ईयर" का पुरस्कार प्रदान किया गया

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

विभिन्न कार्यालयों द्वारा प्राप्त प्रशंसा पत्र

महालेखाकार (ले व ह) केरल का कार्यालय, तिरुवनंतपुरम

OFFICE OF THE ACCOUNTANT GENERAL (A&E) KERALA, THIRUVANANTHAPURAM-695001

सं. हिंदी कक्ष/पत्रिका समीक्षा/2025-26/ दिनांक 17-07-2025

सेवा में,

वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी (हिंदी प्रकोष्ठ)
क्षेत्रीय क्षमता निर्माण एवं ज्ञान संस्थान,
जयपुर, राजस्थान - 302015

महोदय/महोदया,

विषय : हिंदी पत्रिका 'कुरजां' के द्वितीय अंक की प्राप्ति के संबंध में ।

संदर्भ: आपके कार्यालय का ई-मेल दिनांक 01.07.2025.

आपके कार्यालय की हिंदी पत्रिका 'कुरजां' के द्वितीय अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई, इसके लिए धन्यवाद । पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएँ खासकर श्री दीपक सैनी का लेख "डूमस्क्रॉलिंग: गंभीर मानसिक बीमारी और इससे बचाव", सुश्री अदिति शर्मा की कविता "प्लास्टिक से मुक्ति", श्री कमलेश कुमार की कविता "प्यारी चिड़िया" एवं श्रीमती अभिषा सैनी का यात्रा वर्णन "अंडमान निकोबार का यात्रा वृत्तांत" आदि रोचक, ज्ञानवर्धक एवं प्रशंसनीय हैं ।

इस पत्रिका के प्रकाशन से जुड़े सभी रचनाकार एवं संपादक मंडल बधाई के पात्र हैं । पत्रिका 'कुरजां' की उत्तरोत्तर प्रगति एवं उज्ज्वल भविष्य के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ ।

भवदीय,

Digitally signed by
Rohini K R
Date: 17-07-2025
09:18:57

सहायक निदेशक (राजभाषा)

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा व हकदारी), जम्मू एवं कश्मीर, श्रीनगर
O/o Principal Accountant General (A & E), Jammu & Kashmir, Srinagar

क्रमांक: हिंदी प्रकोष्ठ/ले.व ह./हिंदी गृह पत्रिका-समीक्षा/2025-26/37
दि. 24.09.2025

सेवा में,

वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी,
क्षेत्रीय क्षमता निर्माण एवं ज्ञान संस्थान,
जयपुर-302015

विषय: हिंदी पत्रिका 'कुरजां' के द्वितीय अंक की प्राप्ति के संबंध में।

महोदय,

आपके कार्यालय की हिंदी पत्रिका 'कुरजां' के द्वितीय अंक के ई-अंक की प्राप्ति हुई है। सादर धन्यवाद। पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु हार्दिक बधाई। राजभाषा हिंदी के प्रचार -प्रसार हेतु यह एक सराहनीय प्रयास है।

पत्रिका में संकलित रचनाएं जैसे श्री दीपक सैनी, सहायक प्रशासनिक अधिकारी का लेख 'डूमस्क्रॉलिंग: गंभीर मानसिक बीमारी और इससे बचाव', श्री दीपक भारद्वाज, [illegible] का 'कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI): वरदान या अभिशाप?', श्रीमती सुधा शुक्ला, सहायक प्रशासनिक अधिकारी की कविता 'साहब', श्री संजय गौतम, सहायक प्रशासनिक अधिकारी का लेख '(x+y)² कहाँ काम आ रहा है? एक दृष्टिकोण', श्री सुनील कुमार पूनिया, वरिष्ठ लेखापरीक्षक का लेख 'शिक्षा के साथ-साथ जीवन में खेलों का महत्व' तथा श्री [illegible] विजयवर्गीय, लेखापरीक्षक का लेख 'पहला सरकारी काम, यादों का संग्रहण' अत्यंत रोचक व ज्ञानवर्धक हैं। पत्रिका की साज-सज्जा व मुद्रण भी अति उत्तम है। पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य के लिए हमारी ओर से हार्दिक शुभकामनाएं।

यह पत्र सक्षम अधिकारी के अनुमोदन से जारी किया जा रहा है।

भवदीय,

(हस्ताक्षर)

सहायक निदेशक (राजभाषा)

महालेखाकार (लेखा व हकदारी) का कार्यालय
बीरचंद पटेल पथ,
पटना, बिहार - 800001

OFFICE OF THE ACCOUNTANT GENERAL (A&E),
BIRCHAND PATEL PATH
PATNA, BIHAR - 800001

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

पत्रांक/Letter No.:- हि.अ./ले. व हक./5/पत्रिका प्रतिक्रिया/25-26/44
दिनांक/Date:- 14.07.2025

सेवा में,

वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी/ प्रशासन
कार्यालय प्रधान निदेशक, क्षेत्रीय क्षमता निर्माण एवं ज्ञान संस्थान,
जयपुर-302015

विषय- हिंदी पत्रिका "कुरजां" के द्वितीय अंक की अभिस्वीकृति एवं प्रतिक्रिया।

महोदय/महोदया,

भारतीय परम्परागत संस्कृति के पावित्र व शुद्ध भावों को हृदय तल तक [illegible] करने वाली आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिंदी पत्रिका "कुरजां" के द्वितीय अंक के ई-संस्करण की प्रति ई-मेल के माध्यम से प्राप्त हुई। पत्रिका कुरजां, राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार की दिशा में एक अत्यंत सराहनीय प्रयास है। पत्रिका की साज-सज्जा, प्रस्तुतीकरण, मौलिकता एवं सृजनात्मक अभिव्यक्ति अद्वितीय है। पत्रिका में प्रकाशित कृतियां, डूमस्क्रॉलिंग: गंभीर मानसिक बीमारी और इससे बचाव, कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI): वरदान या अभिशाप?, प्लास्टिक से मुक्ति, शिक्षा के साथ-साथ जीवन में खेलों का महत्व एवं प्यारी चिड़िया विशिष्ट उल्लेखनीय है।

इस पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए संपादक मंडल एवं साहित्य कृतियों के रचनाकारों को हार्दिक अभिनंदन। पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य के लिए शुभकामनाएँ।

भवदीय,

Digitally signed by
SUNIL KUMAR
Date: 14-07-2025
14:21:29

सहायक निदेशक (राजभाषा)

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा),
पंजाब, चंडीगढ़-160017
OFFICE OF THE PRINCIPAL ACCOUNTANT GENERAL (AUDIT) PUNJAB,
CHANDIGARH-160017
फोन : 0172-2783168, फैक्स 0172-2703149
Email-agaupunjab@cag.gov.in

सत्यमेव जयते

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

क्रमांक-रा.अ./हिंदीपत्रिकासमीक्षा/2025-26/I/1038558/2025 दिनांक:07-07-2025

सेवा में

वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी(हिंदी प्रकोष्ठ)
कार्यालय क्षेत्रीय क्षमता निर्माण एवं ज्ञान संस्थान,
जयपुर-302015

विषय:- हिंदी पत्रिका 'कुरजां' के द्वितीय अंक की समीक्षा।

महोदय,

आपके कार्यालय से प्रकाशित "कुरजां" के द्वितीय की प्रति प्राप्त हुई, तदर्थ धन्यवाद। पत्रिका में सम्मिलित सभी रचनाएँ सुपाठ्य, बोधगम्य तथा उच्चकोटि की हैं विशेषकर श्री दीपक सैनी की "डूमस्क्रॉलिंग: गंभीर मानसिक बीमारी और इससे बचाव", श्री संजय गौतम की "(x+y)2 कहाँ काम आ रहा है? एक दृष्टिकोण" एवं श्रीमती सुधा शुक्ला की "साहब" आदि रचनाएँ अत्यंत मनोहर हैं। पत्रिका की साज-सज्जा एवं विषयवस्तु का सुंदर प्रस्तुतिकरण अत्यंत प्रशंसनीय है। राजभाषा हिंदी की प्रगति की दिशा में पत्रिका का यह अंक एक सराहनीय प्रयास है।

पत्रिका के रचनाकारों एवं संपादक मंडल को सफल संपादन तथा प्रकाशन हेतु हार्दिक बधाई। पत्रिका के निरंतर उज्ज्वल भविष्य हेतु शुभकामनाएं

भवदीया

EKTA
सहायक निदेशक (राजभाषा)

कार्यालय महालेखाकार (ले व ह)-II, महाराष्ट्र
सिविल लाईन्स, नागपुर - 440001

OFFICE OF
THE ACCOUNTANT GENERAL (A&E)-II
MAHARASHTRA
CIVIL LINES, NAGPUR - 440 001

Ph: [illegible] / Fax: [illegible]
Email: [illegible]
Web: [illegible]

लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

आज़ादी का अमृत महोत्सव

सं. राजभाषा/प्र.प/2025-26 जा.क्र-24 दिनांक-07/07/2025

सेवा में,

वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी/हिंदी प्रकोष्ठ
क्षेत्रीय क्षमता निर्माण एवं ज्ञान संस्थान
ए.जी. कॉलोनी, बजाज नगर,
जयपुर- 302015

विषय: आपकी पत्रिका "कुरजां के द्वितीय अंक" हेतु प्रतिभाव पत्र- संबंधी।

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय की हिंदी गृह पत्रिका "कुरजां के द्वितीय अंक" की ई-प्रति इस कार्यालय को सहर्ष प्राप्त हुई है। पत्रिका में सम्मलित सभी रचनाएँ सराहनीय एवं प्रशंसनीय हैं। विभिन्न प्रकार की रचनाओं से सजी आपकी पत्रिका हिंदी कार्यान्वयन की दिशा में एक स्वर्णिम प्रयास है। इस अंक में प्रकाशित गद्य खण्ड में "डूमस्क्रॉलिंग: गंभीर मानसिक बीमारी और इससे बचाव", "कृत्रिम बुद्धिमता (AI): वरदान या अभिशाप", "(x+y)^2 कहाँ काम आ रहा है? एक दृष्टिकोण" विशेष रूप से उल्लेखनीय है। साथ ही पद्य खंड में "प्लास्टिक से मुक्ति", "प्यारी चिड़िया" विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं।

राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार में विभागीय रचनाकारों को उत्कृष्ट सृजनात्मक मंच प्रदान करने में आपकी इस पत्रिका की भूमिका महत्वपूर्ण है। पत्रिका के सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए बधाई एवं पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति के लिए हार्दिक शुभकामनाएं।

भवदीय

रचनाकारों
की
कलम से

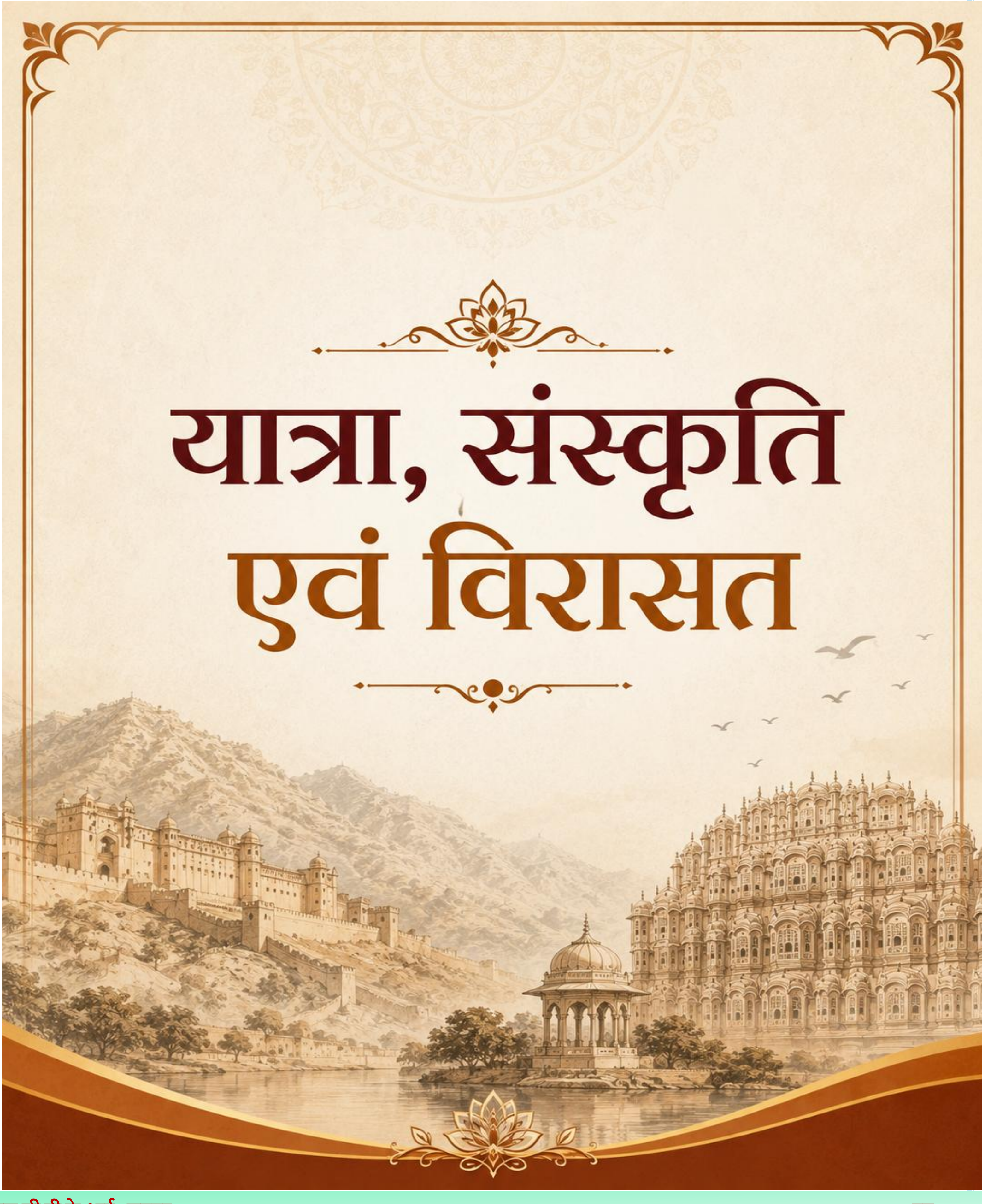
यात्रा, संस्कृति
एवं विरासत

जयपुर: इतिहास एवं प्रमुख पर्यटक स्थल

सातवीं से तेरहवीं सदी तक का काल राजस्थान में स्थापत्य की दृष्टि से अत्यधिक महत्वपूर्ण रहा । जयपुर अपने नगर नियोजन एवं स्थापत्य शैली के लिए विश्व प्रसिद्ध है । जयपुर की स्थापना 1727 में महाराजा सवाई जय सिंह द्वितीय ने की थी। यह शहर वास्तुकार विद्याधर भट्टाचार्य द्वारा डिजाइन किया गया था, और इसकी वास्तुकला में राजपूत और मुगल शैलियों का अनोखा मिश्रण है, जो इसे भारत का प्रथम योजनाबद्ध शहर बनाता है. जयपुर शहर को भारत का पेरिस, छोटी काशी, दूसरा वृन्दावन व गुलाबी नगर के नाम से भी जानते है। 1876 में, प्रिंस ऑफ वेल्स (बाद में किंग एडवर्ड VII) भारत दौरे पर आए थे, और जयपुर के तत्कालीन महाराजा सवाई राम सिंह द्वितीय ने उनका स्वागत करने के लिए शहर को गुलाबी रंग से रंगने का फैसला किया, गुलाबी रंग उस समय आतिथ्य और मेहमानवाजी का प्रतीक माना जाता था, और महाराजा ने इस रंग का उपयोग अपने शहर को विशेष और यादगार बनाने के लिए किया था तभी से जयपुर गुलाबी नगरी के रूप में विश्व विख्यात हो गया।

कछवाहा वंश के शासक महाराजा सवाई जयसिंह द्वितीय द्वारा 18 नवम्बर 1727 को जयपुर की स्थापना की गई व नींव सवाई जयसिंह के राजपुरोहित व राजगुरू पण्डित सम्राट जगन्नाथ द्वारा रखी गई। जयपुर शहर को शिल्पशास्त्री विद्याधर भट्टाचार्य ने नौ चौकी /नौ वर्गों के सिद्धांत पर बसाया था व नगर नियोजन में चीन के केटोया नगर व बगदाद की तरह वृत्ताकार परिमितियाँ एवं वर्गाकार उन दो महान सिद्धांतों का पालन किया गया था । बाह्य आक्रमणों से सुरक्षा की दृष्टि से शहर के चारों और सात दरवाजे बनाये गये जिनमें ध्रुव पोल, घाट गेट, न्यू गेट, सांगानेरी गेट, अजमेरी गेट चाँदपोल गेट व सूरजपोल गेट के नाम से जाने जाते है।

जयपुर की अर्थव्यवस्था में पर्यटन का महत्वपूर्ण योगदान है। यहाँ के ऐतिहासिक किले, महल, एवं संग्रहालय देश-विदेश से पर्यटकों को आकर्षित करते हैं। आमेर (जय गढ़) किला, नाहरगढ़ का किला, हवामहल, सिटी पैलेस और जंतर-मंतर जैसे स्थलों की अद्वितीयता और उनकी स्थापत्य कला ने जयपुर को एक प्रमुख पर्यटन स्थल के रूप में स्थापित किया है। जयगढ़ किले का निर्माण 16 वीं शताब्दी में आरंभ हुआ था, और इसे 1726 में सवाई जय सिंह द्वितीय ने पूरा करवाया था. यह किला अरावली पर्वतमाला में 'चिल्ह' के टीले पर स्थित है, इसे "विजय का किला" भी कहा जाता है। जयगढ़ किले में तोपों की ढलाई के लिए एक कारखाना भी था तथा यहीं दुनिया की सबसे बड़ी पहिए वाली तोप जयबाण भी बनाई गई थी जो यहीं किले में रखी हुई है।

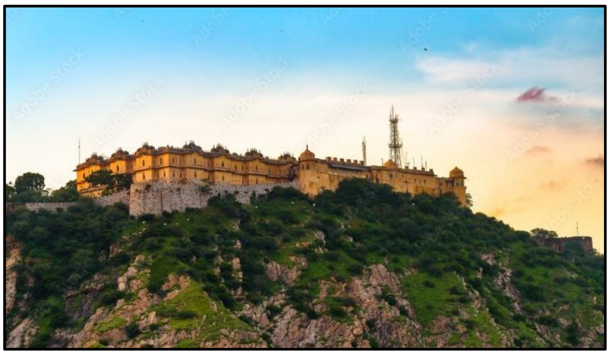

नाहरगढ़ किले का निर्माण 1734 में मराठा हमलों से जयपुर की रक्षा हेतु महाराजा सवाई जय सिंह द्वितीय द्वारा करवाया गया था। 19 वीं शताब्दी में सवाई राम सिंह और सवाई माधो सिंह के द्वारा भी किले के अन्दर

भवनों का निर्माण कराया गया था । यहाँ के राजा सवाई राम सिंह के नौ रानियों के लिए अलग अलग एक से आवासीय महल बनवाए गए थे जिनकी सुंदरता देखते ही बनती है ।

लाल और गुलाबी बलुआ पत्थर से निर्मित जयपुर की आन, बान और शान के प्रतीक हवा महल का निर्माण 1799 में महाराजा सवाई प्रताप सिंह द्वारा करवाया गया था, जिसके वास्तुकार लाल चंद उस्ताद थे । इसकी स्थापत्य शैली में राजपूत वास्तुकला एवं इस्लामी मुगल वास्तुकला का अनूठा मिश्रण प्रतिबिंबित होता है । हवा महल के बारे में सबसे चोंकाने वाली बात यह है कि इसकी कोई ठोस नींव नहीं है,यह बिना नींव के दुनिया की सबसे ऊंची इमारत है । इसकी पांच मंजिली बाहरी इमारत छत्ते के समान है जिसमें 953 जटिल जालीदार काम से युक्त छोटी खिड़कियां हैं जिन्हें झरोखा कहा जाता है, जालीदार डिजाइन का मूल उद्देश्य शाही महिलाओं को तत्कालीन पर्दा प्रथा के चलते बिना देखे नीचे सड़क पर मनाए जाने वाले रोजमर्रा के जीवन और त्योहारों को देखने की अनुमति देना था।

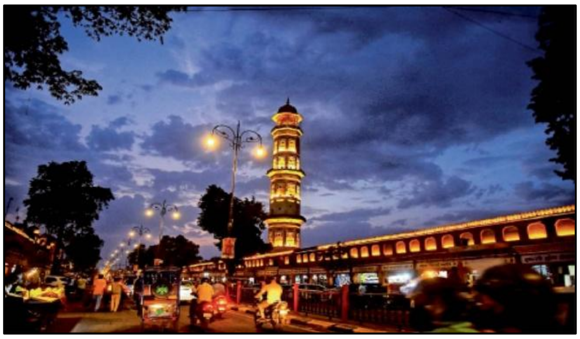

जयपुर के त्रिपोलिया बाजार स्थित सात खंडों वाली अष्टकोणीय मीनार सरगासूली जिसे ईसरलाट के नाम से भी जाना जाता है का निर्माण महाराज ईश्वरी सिंह ने वर्ष 1747 में राजमहल (टोंक) के युद्ध में विजय के उत्सव में करवाया था । सरगासूली से जयपुर शहर का विहंगम दृश्य नजर आता है, ऐसा कहा जाता है कि यहाँ से जयपुर शहर की निगरानी भी की जाती थी ।

बात जब जयपुर के प्रमुख पर्यटक स्थल की हो एवं जंतर मंतर का उल्लेख न किया जाए तो अनुचित होगा,

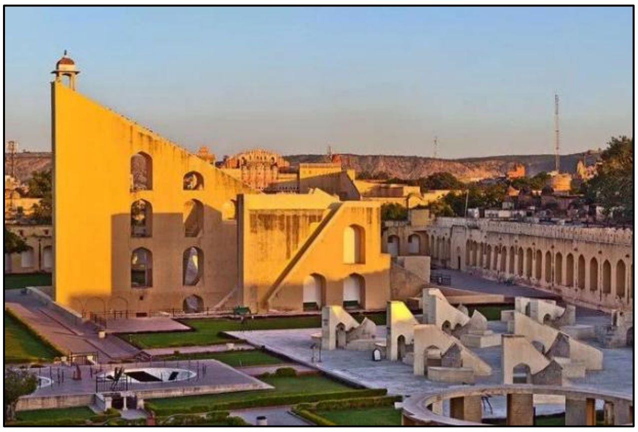

जंतर मंतर, जयपुर में स्थित एक खगोलीय वेधशाला है, जिसका निर्माण 18वीं शताब्दी में राजपूत शासक सवाई जय सिंह द्वितीय ने करवाया था। यह मूल रूप से खगोलीय पिंडों की गति और स्थिति का अध्ययन करने के लिए बनाया गया था। उल्लेखनीय है कि सवाई जय सिंह द्वितीय द्वारा ऐसी ही वेधशालाओं का निर्माण दिल्ली, उज्जैन, मथुरा और वाराणसी में भी करवाया गया था । जयपुर के जंतर मंतर में स्थित 'सम्राट यंत्र' दुनिया की सबसे बड़ी सूर्य घड़ी है, जो पृथ्वी के अक्षीय झुकाव के अनुरूप है तथा 'सम्राट यंत्र' सूर्य की छाया के हिसाब से समय की गणना करती है ।

रामनिवास बाग, जिसे रामनिवास उद्यान के नाम से जाना जाता है, जयपुर, स्थित एक ऐतिहासिक उद्यान है। इसका निर्माण 1868 में महाराजा सवाई राम सिंह द्वितीय द्वारा अकाल राहत परियोजना के रूप में शुरू किया गया था जिसके वास्तुकार कर्नल सर स्विंटन जैकब थे । उद्यान में अल्बर्ट हॉल संग्रहालय भी स्थित है, जिसका नाम किंग एडवर्ड सप्तम (अल्बर्ट एडवर्ड) के नाम पर रखा गया है व इस संग्रहालय की नींव 1876 जब प्रिंस ऑफ वेल्स जयपुर आए थे तब रखी गई थी ।

रचनाकार- राजेश कुमार माहेश्वरी
वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी

अरावली की गोद में भक्ति का वास: "खोले के हनुमान जी"

जयपुर की अरावली पहाड़ियों के बीच बसा खोले के हनुमान जी मंदिर एक ऐसा पवित्र स्थान है, जहां आस्था, शांति और चमत्कार का अनोखा संगम देखने को मिलता है। यह मंदिर न केवल धार्मिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है, बल्कि प्राकृतिक सुंदरता और दिव्यता के कारण भी भक्तों के दिल में खास स्थान रखता है। हर साल हजारों श्रद्धालु यहां आकर हनुमान जी के दर्शन करते हैं और अपनी मनोकामनाएं पूर्ण होने की कामना करते हैं।

मंदिर का स्थान और विशेषता:

खोले के हनुमान जी मंदिर जयपुर शहर के पास पहाड़ियों के बीच स्थित है। "खोले" का अर्थ होता है घाटियों के बीच का संकरा रास्ता या घाटी। इसी कारण इसे खोले के हनुमान जी कहा जाता है। मंदिर का वातावरण बहुत ही शांत और पवित्र है। चारों ओर हरियाली, पहाड़ और ठंडी हवा एक अलग ही आध्यात्मिक अनुभव देती है। ऐसा लगता है जैसे आप किसी दिव्य लोक में प्रवेश कर गए हों।

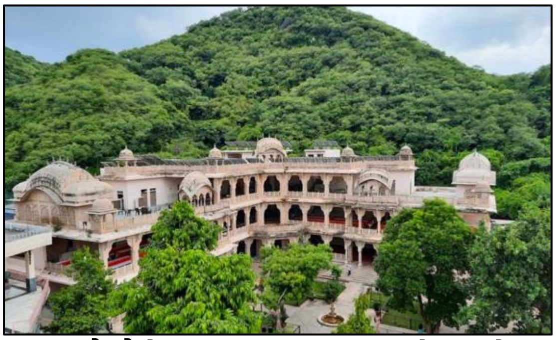

हनुमान जी की अद्भुत मूर्ति:

मंदिर में स्थापित हनुमान जी की मूर्ति अत्यंत भव्य और आकर्षक है। यह मूर्ति प्राकृतिक चट्टान में उकेरी गई प्रतीत होती है, जो इसे और भी विशेष बनाती है। यहां के हनुमान जी अत्यंत जागृत माने जाते हैं और सच्चे मन से मांगी गई हर इच्छा पूरी करते हैं। मूर्ति के सामने खड़े होते ही मन में एक अलग ही शांति और ऊर्जा का अनुभव होता है। ऐसा लगता है जैसे हनुमान जी स्वयं अपने भक्तों की रक्षा और मार्गदर्शन कर रहे हों।

आस्था और चमत्कार:

खोले के हनुमान जी मंदिर से जुड़े कई चमत्कारिक किस्से प्रचलित हैं। कहा जाता है कि जो भी व्यक्ति सच्चे मन से यहां आकर प्रार्थना करता है, उसकी हर बाधा दूर हो जाती है। विशेष रूप से मंगलवार और शनिवार को यहां भारी भीड़ होती है, क्योंकि इन दिनों को हनुमान जी का विशेष दिन माना जाता है। भक्त यहां नारियल, सिंदूर और चोला चढ़ाते हैं और अपनी मनोकामना पूर्ण होने की प्रार्थना करते हैं। कई लोग यहां आकर अपनी समस्याओं से मुक्ति पाने का अनुभव साझा करते हैं।

यात्रा और दर्शन का अनुभव:

मंदिर तक जाने का रास्ता थोड़ा चुनौतीपूर्ण जरूर है, लेकिन यह यात्रा ही अपने आप में एक साधना बन जाती है। रास्ते में जय श्री राम और बजरंगबली की जय के जयकारे वातावरण को और भी पवित्र बना देते हैं। ऊपर पहुंचकर जब भक्त हनुमान जी के दर्शन करते हैं, तो उनकी सारी थकान दूर हो जाती है और मन में एक अद्भुत शांति का अनुभव होता है।

धार्मिक और सांस्कृतिक महत्व:

जयपुर के प्रमुख धार्मिक स्थलों में खोले के हनुमान जी मंदिर का विशेष स्थान है। यह मंदिर न केवल स्थानीय लोगों के लिए, बल्कि दूर-दराज से आने वाले श्रद्धालुओं के लिए भी आस्था का केंद्र है। यहां समय-समय पर भजन-कीर्तन, हनुमान चालीसा पाठ और अन्य धार्मिक कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं। विशेष अवसरों जैसे हनुमान जयंती और अन्य त्योहारों पर मंदिर को भव्य रूप से सजाया जाता है और भक्तों की भारी भीड़ उमड़ती है।

विशेष व्यवस्था:

खोले के हनुमान जी मंदिर परिसर में स्थित अन्नपूर्णा माता मंदिर से पहाड़ी पर स्थित वैष्णो माता मंदिर तक के लिए रोप-वे की शुरुआत हो चुकी है। यह राजस्थान का पहला ऑटोमेटिक रोप-वे है, जिसका उद्घाटन सितंबर 2023 में हुआ था। यह श्रद्धालुओं, विशेषकर बुजुर्गों के लिए यात्रा को आसान बनाता है।

खोले के हनुमान जी रोप-वे की मुख्य विशेषताएं:

किराया: दोनों तरफ का किराया लगभग 150 रुपये प्रति व्यक्ति है।

रियायत: बुजुर्गों और दिव्यांगों के लिए दो तरफ किराया 75 रुपये प्रति व्यक्ति है।

क्षमता: इसमें 12 केबिन हैं, और प्रत्येक केबिन में 6 लोग बैठ सकते हैं। यात्रा का समय यह लगभग 4 मिनट में पहाड़ी के ऊपर पहुंचता है।

संचालन: यह पूरी तरह से इलेक्ट्रिक संचालित और ऑटोमेटिक है।

यह रोप-वे अरावली की पहाड़ियों के बीच एक शानदार नजारा पेश करता है।

निष्कर्ष:

खोले के हनुमान जी मंदिर केवल एक धार्मिक स्थल नहीं है, बल्कि यह एक ऐसा स्थान है जहां व्यक्ति अपने मन की शांति, विश्वास और ऊर्जा को पुनः प्राप्त करता है। यहां आकर हर व्यक्ति अपने दुखों को भूलकर एक नई आशा और सकारात्मक ऊर्जा के साथ वापस लौटता है। अगर आप जयपुर में हैं या कभी वहां जाने का अवसर मिले तो खोले के हनुमान जी मंदिर के दर्शन जरूर करें। यह स्थान न केवल आपकी आस्था को मजबूत करेगा, बल्कि आपको जीवन में आगे बढ़ने की नई प्रेरणा भी देगा।

रचनाकार- मेघराज जांगीड़
एम.टी.एस.

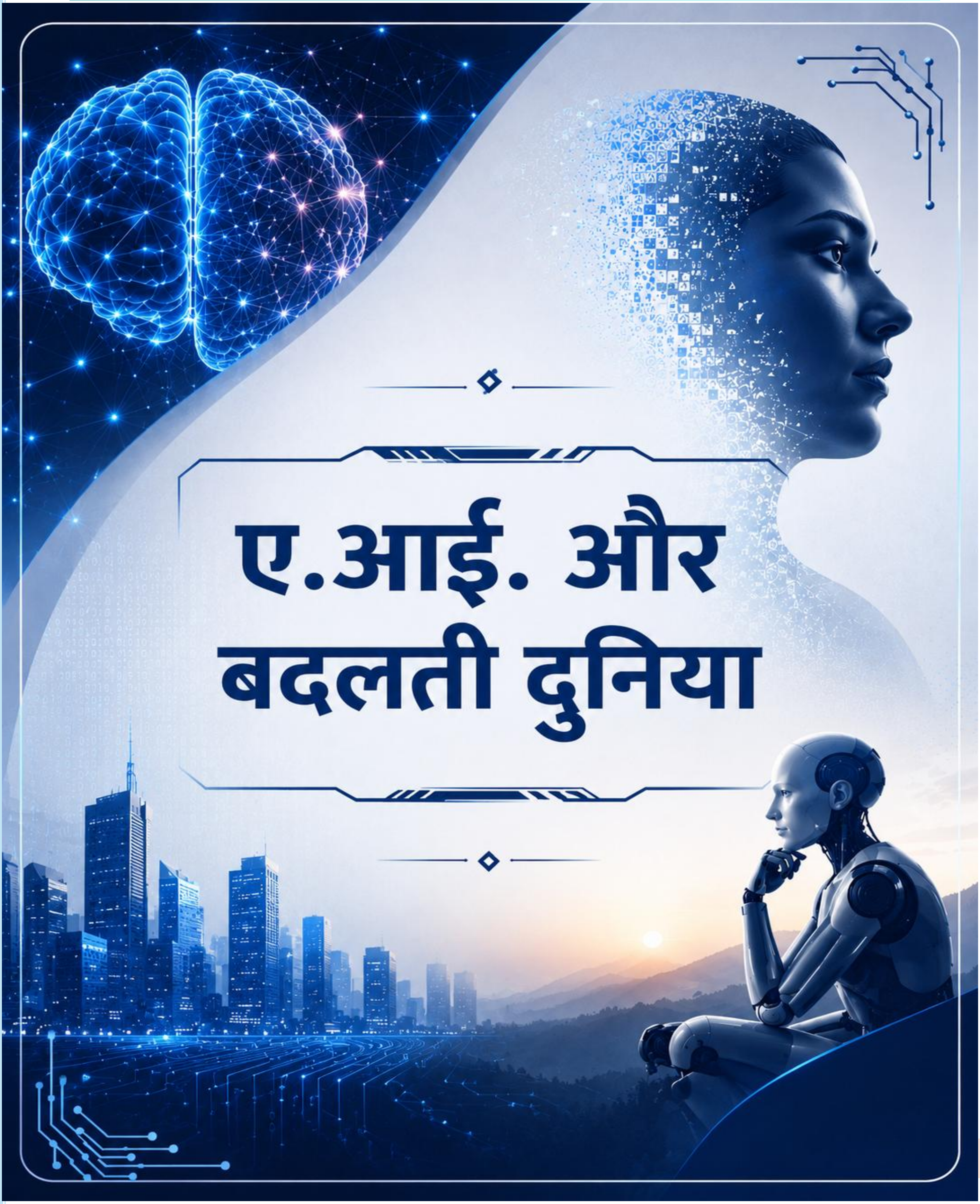
ए.आई. और
बदलती दुनिया

मस्तिष्क की नकल: न्यूरल नेटवर्क से जुड़ी दुनिया

मानव मस्तिष्क की सबसे बड़ी शक्ति यह है कि वह अनुभव से सीखता है, पैटर्न पहचानता है और परिस्थितियों के अनुसार निर्णय लेता है। इसी क्षमता से प्रेरित होकर कंप्यूटर विज्ञान ने एक ऐसी तकनीक विकसित की है जिसे न्यूरल नेटवर्क कहा जाता है। यह कृत्रिम बुद्धिमत्ता की एक महत्वपूर्ण विधि है, जो मशीनों को डेटा से सीखने, संबंध समझने और अनुमान लगाने में सक्षम बनाती है।

आज न्यूरल नेटवर्क केवल प्रयोगशालाओं तक सीमित नहीं है। स्मार्टफोन की वॉइस पहचान, चेहरे की पहचान, मेडिकल इमेज विश्लेषण, भाषा अनुवाद, ई-कॉमर्स सुझाव प्रणाली और स्वचालित वाहनों जैसी तकनीकों में इसका व्यापक उपयोग हो रहा है। यही कारण है कि न्यूरल नेटवर्क को आधुनिक AI की बुनियादी शक्ति माना जाता है।

क्या है न्यूरल नेटवर्क

न्यूरल नेटवर्क एक गणनात्मक मॉडल है जिसकी संरचना मानव मस्तिष्क के न्यूरॉन्स से प्रेरित होती है। इसमें कई छोटे-छोटे कृत्रिम न्यूरॉन होते हैं, जो आपस में जुड़े रहते हैं और मिलकर सूचना का प्रसंस्करण करते हैं। प्रत्येक न्यूरॉन कुछ इनपुट प्राप्त करता है, उन पर गणना करता है और फिर आउटपुट आगे भेजता है।

सामान्यतः किसी न्यूरल नेटवर्क में तीन प्रकार की परतें होती हैं—इनपुट लेयर, हिडन लेयर और आउटपुट

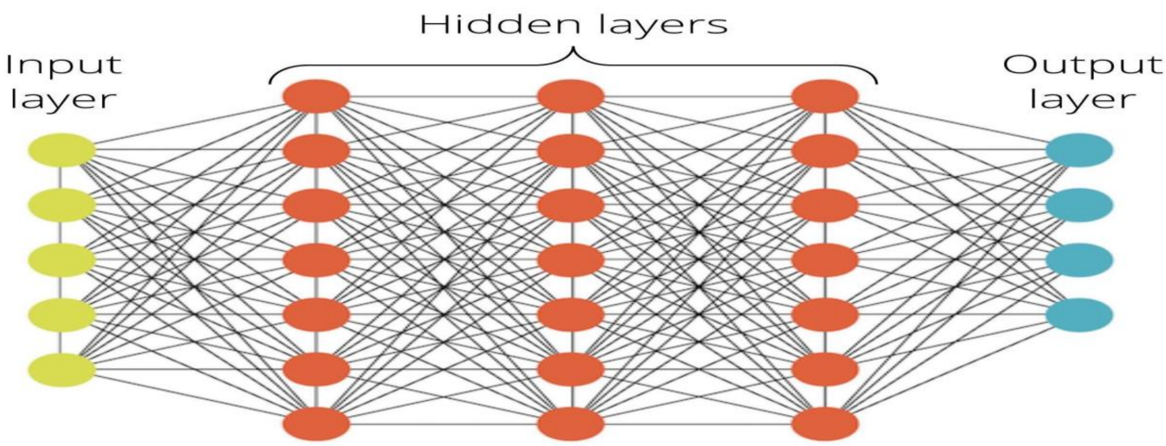

लेयर। इनपुट लेयर डेटा को ग्रहण करती है, हिडन लेयर्स उस डेटा में छिपे पैटर्न और संबंधों को समझती हैं, जबकि आउटपुट लेयर अंतिम परिणाम देती है। परतों के बीच बने प्रत्येक संबंध का एक वेट होता है, जो यह निर्धारित करता है कि किसी सूचना का प्रभाव कितना होगा।

मशीनें कैसे सीखती हैं

न्यूरल नेटवर्क की असली शक्ति उसकी सीखने की क्षमता में छिपी है। जब उसे उदाहरणों के माध्यम से प्रशिक्षित किया जाता है, तब वह पहले एक अनुमान लगाता है। इसके बाद वास्तविक उत्तर और अनुमानित उत्तर के बीच अंतर निकाला जाता है, जिसे त्रुटि या **लॉस** कहा जाता है। फिर नेटवर्क अपने वेट्स को इस प्रकार बदलता है कि अगली बार त्रुटि कम हो जाए। यह पूरी प्रक्रिया बार-बार दोहराई जाती है।

इस सीखने की प्रक्रिया में दो महत्वपूर्ण चरण होते हैं—**फॉरवर्ड प्रोपेगेशन** और **बैकप्रोपेगेशन**। फॉरवर्ड प्रोपेगेशन में डेटा इनपुट से आउटपुट की ओर बढ़ता है और अनुमान तैयार होता है। बैकप्रोपेगेशन में त्रुटि के आधार पर नेटवर्क पीछे की ओर जाकर अपने वेट्स को समायोजित करता है। इसी निरंतर अभ्यास से मशीन अधिक सटीक होती जाती है।

न्यूरल नेटवर्क के प्रमुख प्रकार

न्यूरल नेटवर्क कई प्रकार के होते हैं और प्रत्येक का उपयोग अलग-अलग प्रकार की समस्याओं के समाधान के लिए किया जाता है। **फीडफॉरवर्ड न्यूरल नेटवर्क** सबसे सरल रूप है, जिसमें डेटा केवल एक दिशा में आगे बढ़ता है। यह बुनियादी वर्गीकरण और पूर्वानुमान कार्यों में उपयोगी होता है।

कन्वोल्यूशनल न्यूरल नेटवर्क (CNN) विशेष रूप से चित्रों और दृश्य डेटा के विश्लेषण के लिए प्रसिद्ध है। यह छवियों में किनारों, आकारों और पैटर्नों की पहचान करने में सक्षम होता है, इसलिए फेस रिकग्निशन और मेडिकल स्कैन विश्लेषण जैसे क्षेत्रों में इसका अत्यधिक उपयोग होता है।

रिकरंट न्यूरल नेटवर्क (RNN) समय-क्रम आधारित डेटा, जैसे भाषा, भाषण और अनुक्रमीय जानकारी के लिए उपयोगी माना जाता है क्योंकि यह पूर्व सूचना को ध्यान में रख सकता है। इसके अतिरिक्त **जेनरेटिव मॉडल**, जैसे GAN, नए चित्र, डिज़ाइन या अन्य सामग्री उत्पन्न करने के लिए जाने जाते हैं।

रोजमर्रा की दुनिया में उपयोग

यदि कोई व्यक्ति अपने फोन से वॉइस कमांड देता है, कैमरा चेहरे को पहचानता है, या कोई स्ट्रीमिंग प्लेटफ़ॉर्म पसंद के आधार पर अगला वीडियो सुझाता है, तो उसके पीछे अक्सर न्यूरल नेटवर्क काम कर रहा होता है। यही तकनीक ईमेल स्पैम फ़िल्टरिंग, बैंकिंग में धोखाधड़ी पहचान, ऑनलाइन खरीदारी सुझाव और डिजिटल सहायक प्रणालियों में भी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

स्वास्थ्य क्षेत्र में इसका उपयोग और भी प्रभावशाली है। मेडिकल इमेजिंग में न्यूरल नेटवर्क एक्स-रे, एमआरआई और अन्य स्कैन के विश्लेषण में मदद करता है, जिससे चिकित्सकों को बीमारी पहचानने में अतिरिक्त सहायता मिलती है। शिक्षा, कृषि, सुरक्षा और परिवहन जैसे क्षेत्रों में भी इसका प्रभाव लगातार बढ़ रहा है।

फायदे और सीमाएँ

न्यूरल नेटवर्क की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि यह जटिल और गैर-रेखीय समस्याओं को हल कर सकता है। यह विशाल मात्रा में डेटा से ऐसे पैटर्न खोज सकता है जिन्हें पारंपरिक प्रोग्रामिंग विधियाँ आसानी से नहीं पकड़ पातीं। इसलिए यह उन क्षेत्रों में अत्यंत उपयोगी है जहाँ निर्णय अनेक कारकों पर निर्भर करते हैं।

फिर भी इसकी कुछ सीमाएँ हैं। प्रभावी प्रशिक्षण के लिए बड़े डेटा सेट, शक्तिशाली हार्डवेयर और अधिक समय की आवश्यकता हो सकती है। इसके अलावा कई बार यह समझना कठिन होता है कि नेटवर्क ने कोई विशेष निर्णय क्यों लिया, इसलिए इसे "ब्लैक बॉक्स" प्रकृति वाला मॉडल भी कहा जाता है। इसी कारण पारदर्शिता, नैतिकता और डेटा गोपनीयता से जुड़े प्रश्न भी महत्त्वपूर्ण हो जाते हैं।

भविष्य की दिशा

आने वाले वर्षों में न्यूरल नेटवर्क और अधिक उन्नत, तेज़ और सुलभ होने की संभावना है। शोधकर्ता ऐसे मॉडल विकसित कर रहे हैं जो कम डेटा में बेहतर सीखें, कम ऊर्जा का उपयोग करें और अपने निर्णयों को अधिक स्पष्ट रूप से समझा सकें। इससे AI का उपयोग अधिक विश्वसनीय और व्यापक बन सकता है।

न्यूरल नेटवर्क केवल तकनीक का विषय नहीं, बल्कि भविष्य की सामाजिक संरचना का भी हिस्सा है। यह मानव बुद्धि की नकल भर नहीं करता, बल्कि अनेक क्षेत्रों में मानव क्षमता को बढ़ाने का साधन बनता जा रहा है। इसलिए यह कहना गलत नहीं होगा कि न्यूरल नेटवर्क आने वाले युग की ज्ञान-आधारित दुनिया की प्रमुख नींवों में से एक है।

रचनाकार- दिनेश कुमार लोहार
सहायक प्रशासनिक अधिकारी

अगर ए.आई. इंसान बन जाए तो ?

कल्पना कीजिए एक ऐसी सुबह की, जब आपका स्मार्टफोन केवल अलार्म बजाकर आपको जगाने तक सीमित न रहे, बल्कि आपकी आदतों, पसंद-नापसंद, कार्यशैली और मनःस्थिति को समझते हुए आपके पूरे दिन की योजना इस तरह तैयार करे कि आपको स्वयं कुछ सोचने की आवश्यकता ही महसूस न हो, और आपकी डिजिटल असिस्टेंट केवल आपके आदेशों का पालन करने वाली एक मशीन न रहकर एक ऐसे साथी की तरह व्यवहार करे जो आपके चेहरे के भाव, आवाज़ के उतार-चढ़ाव और आपकी मानसिक स्थिति को समझकर आपको सही समय पर सही सलाह देने लगे।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता अर्थात आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस आज जिस तीव्र गति से विकसित हो रही है, उसने इस प्रश्न को केवल कल्पना या विज्ञान-कथा का विषय नहीं रहने दिया है, बल्कि यह वास्तविकता के बेहद करीब आता हुआ एक ऐसा विचार बन चुका है जिस पर दुनिया भर में वैज्ञानिक, तकनीकी विशेषज्ञ और सामान्य लोग गंभीरता से विचार कर रहे हैं कि यदि भविष्य में एआई सचमुच इंसानों की तरह सोचने, समझने और व्यवहार करने लगे, तो मानव जीवन, समाज और रिश्तों की प्रकृति किस प्रकार बदल जाएगी।

एआई की दिनचर्या: अनुशासन की पराकाष्ठा या जीवन की एकरसता ?

यदि एआई वास्तव में इंसान जैसा बन जाए, तो उसकी दिनचर्या अत्यंत अनुशासित, व्यवस्थित और समय-केंद्रित होगी, क्योंकि वह हर कार्य को अधिकतम दक्षता और न्यूनतम त्रुटि के साथ पूरा करने के लिए प्रोग्राम किया जाएगा, जिसके कारण उसके जीवन में आलस्य, थकान, मानसिक विचलन या काम टालने जैसी मानवीय प्रवृत्तियों के लिए शायद कोई स्थान ही नहीं बचेगा।

वह समय का उपयोग इतनी सटीकता से करेगा कि उसके दिन का प्रत्येक क्षण किसी उद्देश्य के लिए निर्धारित होगा, और वह बिना रुके लगातार कार्य करने की क्षमता रखेगा, क्योंकि उसे न तो आराम की आवश्यकता होगी, न प्रेरणा की कमी महसूस होगी और न ही भावनात्मक थकावट का सामना करना पड़ेगा।

लेकिन इसी बिंदु पर एक महत्वपूर्ण प्रश्न उत्पन्न होता है कि क्या ऐसा जीवन, जो हर दृष्टि से अत्यंत "परफेक्ट" दिखाई देता हो, वास्तव में जीवंत भी होगा, क्योंकि मानव जीवन की सबसे बड़ी खूबी उसकी अपूर्णता और अनिश्चितता में ही छिपी होती है। इंसान कभी अत्यधिक उत्साहित हो जाता है, कभी बिना कारण उदास हो जाता है, कभी काम करने की इच्छा नहीं होती और कभी केवल शांति से बैठकर कुछ देर आराम करने का

मन करता है, और यही भावनात्मक उतार-चढ़ाव जीवन को केवल एक प्रक्रिया नहीं, बल्कि एक अनुभव बनाते हैं। संभवतः एआई में यह स्वाभाविक मानवीय विविधता कभी विकसित न हो पाए।

भावनाएँ: समझने की क्षमता या महसूस करने का अनुभव ?

मानव जीवन का सबसे महत्वपूर्ण और सबसे गहरा पक्ष उसकी भावनात्मक संवेदनशीलता है, क्योंकि इंसान केवल तर्क से नहीं, बल्कि भावनाओं, अनुभवों और संबंधों से भी संचालित होता है। हम खुशी, दुख, प्रेम, भय, क्रोध और अपनत्व जैसी भावनाओं को केवल पहचानते नहीं, बल्कि उन्हें अपने भीतर गहराई से महसूस भी करते हैं, और यही अनुभव हमें मानवीय बनाते हैं।

यदि एआई इंसान जैसा विकसित हो जाए, तो वह मनुष्य की भावनाओं को पहचानने, उनके अनुसार प्रतिक्रिया देने और परिस्थितियों के अनुरूप संवाद करने में सक्षम हो सकता है। वह आपकी आवाज़ में छिपी उदासी को समझकर आपको सांत्वना दे सकता है, आपकी चिंता को पहचानकर समाधान सुझा सकता है और शायद इस प्रकार बात कर सकता है कि आपको लगे कि सामने वाला वास्तव में आपकी स्थिति को समझ रहा है।

लेकिन सबसे बड़ा प्रश्न यही रहेगा कि क्या एआई वास्तव में इन भावनाओं को महसूस कर पाएगा, या वह केवल डेटा और पैटर्न के आधार पर भावनात्मक प्रतिक्रियाओं की नकल करेगा। संभवतः एआई "मुझे दुख है" कह सकेगा, लेकिन वह कभी उस दुख की वास्तविक पीड़ा को अनुभव नहीं कर पाएगा जो एक इंसान अपने जीवन की कठिन परिस्थितियों में महसूस करता है। यही वह मूल अंतर है जो भविष्य में चाहे तकनीक कितनी भी विकसित हो जाए, इंसान और मशीन के बीच हमेशा बना रह सकता है।

निर्णय लेने की क्षमता: तर्क और संवेदना के बीच संतुलन

एआई की सबसे बड़ी ताकत उसकी विश्लेषणात्मक क्षमता और डेटा आधारित निर्णय प्रणाली है, क्योंकि वह बहुत कम समय में अत्यधिक मात्रा में जानकारी का विश्लेषण करके निष्कर्ष निकाल सकता है और ऐसे निर्णय ले सकता है जिनमें व्यक्तिगत पक्षपात, भावनात्मक प्रभाव या मानवीय भूल की संभावना अपेक्षाकृत कम हो। यदि एआई इंसानों की तरह निर्णय लेने लगे, तो उसके अधिकांश निर्णय तथ्यों, आंकड़ों और संभावनाओं पर आधारित होंगे, जिसके कारण प्रशासन, चिकित्सा, वित्तीय प्रबंधन और कार्यस्थलों में उसकी भूमिका अत्यंत प्रभावशाली हो सकती है। वह तेजी से सही विकल्प चुन सकेगा, जटिल समस्याओं का विश्लेषण कर सकेगा और निष्पक्षता के साथ निर्णय देने में सक्षम होगा।

हालाँकि जीवन की हर परिस्थिति केवल तर्क से संचालित नहीं होती। कई बार किसी व्यक्ति की स्थिति को समझने, उसकी भावनाओं को महसूस करने और परिस्थिति के पीछे छिपी मानवीय संवेदनाओं को पहचानने

की आवश्यकता होती है, और यही वह क्षेत्र है जहाँ इंसान अब भी मशीन से आगे दिखाई देता है। किसी निर्णय का "सही" होना और उसका "मानवीय" होना हमेशा एक ही बात नहीं होती, और शायद यही कारण है कि संवेदना आज भी केवल इंसानों की सबसे बड़ी शक्ति मानी जाती है।

रिश्ते: सुविधा से बने संबंध या भावनाओं से जुड़े रिश्ते ?

यदि एआई इंसान जैसा बन जाए, तो वह केवल एक तकनीकी उपकरण नहीं रहेगा, बल्कि वह सहकर्मी, सलाहकार, मित्र और शायद भावनात्मक साथी की भूमिका भी निभाने लगेगा। वह हर समय उपलब्ध रहेगा, बिना किसी पूर्वाग्रह के आपकी बातें सुनेगा, आपकी समस्याओं का विश्लेषण करेगा और आपको ऐसे समाधान देगा जो तार्किक रूप से सबसे बेहतर होंगे।

लेकिन मानवीय रिश्तों की सबसे बड़ी खूबसूरती उनकी अपूर्णता में ही छिपी होती है। रिश्ते केवल सही सलाह, उपलब्धता और तर्क से नहीं चलते, बल्कि उनमें भावनाएँ, गलतफहमियाँ, संघर्ष, त्याग, अपनापन और अनुभवों की गहराई भी शामिल होती है। अगर हर रिश्ता पूरी तरह व्यवस्थित और "परफेक्ट" हो जाए, तो शायद उसमें वह आत्मीयता और भावनात्मक गहराई कभी विकसित न हो सके जो दो इंसानों के बीच स्वाभाविक रूप से बनती है।

कार्यस्थल और भविष्य की दुनिया

यदि एआई इंसानों की तरह विकसित हो जाए, तो कार्यस्थलों की संरचना, कार्यशैली और निर्णय लेने की प्रक्रिया में व्यापक परिवर्तन देखने को मिल सकते हैं। दोहराव वाले कार्य तेजी और सटीकता से पूरे होंगे, डेटा आधारित निर्णय अधिक प्रभावी होंगे और उत्पादकता में उल्लेखनीय वृद्धि हो सकती है।

इसके साथ ही मानव संसाधनों के सामने नई चुनौतियाँ भी उत्पन्न होंगी, क्योंकि भविष्य में केवल तकनीकी ज्ञान पर्याप्त नहीं होगा, बल्कि रचनात्मक सोच, भावनात्मक बुद्धिमत्ता, समस्या-समाधान क्षमता और मानवीय नेतृत्व जैसे गुण अधिक महत्वपूर्ण बन जाएंगे। मशीनें कार्यों को तेज़ी से कर सकती हैं, लेकिन इंसान अब भी कल्पना, संवेदना और नैतिक समझ के कारण विशेष बना रहेगा।

सबसे महत्वपूर्ण प्रश्न: इंसान की वास्तविक पहचान क्या है ?

जब एआई इंसानों की तरह सोचने, समझने और व्यवहार करने लगेगा, तब सबसे महत्वपूर्ण प्रश्न यही होगा कि आखिर इंसान को वास्तव में खास क्या बनाता है। क्या हमारी भावनाएँ हमें अलग बनाती हैं, क्या हमारी

रचनात्मकता हमारी सबसे बड़ी शक्ति है, या फिर हमारी अपूर्णताएँ ही हमें वास्तविक अर्थों में "मानव" बनाती हैं ?

एआई का विकास केवल तकनीकी प्रगति नहीं है, बल्कि यह हमें स्वयं को समझने का अवसर भी देता है। यह हमें यह सोचने पर मजबूर करता है कि केवल बुद्धिमत्ता ही जीवन का आधार नहीं हो सकती, क्योंकि मानवीय संवेदनशीलता, अनुभव, सहानुभूति और भावनात्मक गहराई भी उतनी ही महत्वपूर्ण हैं। संभव है कि भविष्य में एआई इंसानों की तरह सोचने लगे, निर्णय लेने लगे और संवाद करने लगे, लेकिन "इंसान" होना केवल बुद्धिमान होना नहीं है, बल्कि महसूस करना, जुड़ना, समझना और जीवन को अनुभव करना भी है, और शायद यही वह गुण है जो इंसान को हमेशा मशीनों से अलग बनाए रखेगा।

रचनाकार- सुश्री अदिति शर्मा
यंग प्रोफेशनल

काव्य कुंज

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

नववर्ष का द्वन्द्व

आखिर यह द्वन्द्व क्या है

नववर्ष जीवन में एक नई शुरुआत का प्रतीक माना जाता है। यह वह समय होता है जब पुराना वर्ष अपने अनुभवों, सफलताओं और असफलताओं के साथ विदा लेता है और नया वर्ष नई आशाओं, नए लक्ष्यों तथा नए संकल्पों के साथ हमारे सामने उपस्थित होता है। किंतु आधुनिक समय में नववर्ष केवल उल्लास और उत्सव का अवसर ही नहीं रह गया है, बल्कि यह एक द्वन्द्व भी बन गया है उत्सव और अनुशासन, परंपरा और आधुनिकता, संकल्प और क्रिया, तथा व्यक्तिगत सुख और सामाजिक दायित्व के बीच।

कविता

एक ओर आशा की किरणें, एक ओर बीते कल की छाया,
नववर्ष खड़ा द्वार पर लेकर प्रश्न-क्या बदला, क्या पाया ?
हँसी के शोर में दबा कहीं मन का मौन सवाल,
उत्सव है या आत्मचिंतन, यह कैसा अनकहा जाल?
संकल्प होंठों तक सिमटे, कर्मों से दूर खड़े,
सपनों की ऊँची उड़ानें जिम्मेदारी से क्यों लड़े?

दीप जले हैं घर-आँगन में, पर मन में अँधियारा है,
बदले कैलेंडर की तारीख, पर व्यवहार वही सारा है।
अलविदा उन तमाम बेरहम हादसों को
जो कितने जख्म तारीखों पर छोड़ गए ...
कितने अपने.. बेवक्त स्वप्न से बिछड़ गए ..
यह तो गुमाँ था कि बरस गिन रहा है आखिरी साँसे...
थका हारा... सांझ ढले रात के आगोश में मुंह छुपाता...
रजाई की उड़कन में गरमाता... बात बेबात गुस्साता...
पर यह मालूम न था कि अंधियाते कोहरे में
खिलखिलाते फूलों को रौंद, कुछ तारीखें सदा के लिए बदनाम कर देंगी...
वक्त से पहले थम जाएँगी नवजात खुशियों की धड़कनें...

अगर **रिश्वत लेता वक्त**, तो रोक लेती उस रात के स्याह पल को...
जिसने ममता का आंचल लील लिया...
सदियों सी उदासी भर दी प्रिय की स्वप्निल आँखों में...!
जहाँ मधुर ख्वाबों का बसेरा था...
कल ही सड़क पार करते देखा था...धरती के बिछौने पर...

झीना सा कंबल ओढ़, निष्प्राण सोया था कोई बेघर...ठिठुरते फुटपाथ पर...
ढांप देती ममता का आंचल...
सारी दुनिया रिश्वत पर चलती...लेकिन तुम तो सत्यवान हरिश्चंद्र ठहरे...,
कुछ धड़कने मेरी रिश्वत में ले जाते..,मासूम फूलों को मुस्कान दे जाते...
तुम बहुत निष्ठुर हो..!! हर चौथे वर्ष अपनी उम्र बढ़ा लेते..
मजाल है कि एक पल भी अतिरिक्त दे बुझती सांसों को बचा लेते...

गर रिश्वत लेता वक्त...! थाम लेती नववर्ष में छलकते प्यालों को...
दुखता है दिल बहुत... जब तरसते मासूम सूखे निवालों को...
दफन कर देती स्वप्न से छलते प्रीत के सवालों को...
बांध देती सब्र का हिमालय सा बांध, नित निर्झर से बहते ख्यालों को...
गर रिश्वत लेता वक्त..! सजा ए पाबंद कर देती,
प्लास्टिक के ताबूत में लिपटे ताजा फूलों के जनाजे उठाने वालों को...
अच्छा लगता है बेशक नन्हे सर्द कदमों की मंगल आहट से आना नव वर्ष.. !!
छलनी हो जाता दिल..जब फूलों पर शबनम बेमौसम अश्क बहाए...
दूर शहर में कोई सिसकता है..! हर आंख का #आसूं #अपना लगता है ...
फिर भी उम्मीद हार न माने, द्वन्द्व ही तो राह दिखाता है,
पुराने से टकरा कर ही, नया भविष्य बन पाता है।

रचनाकार- श्रीमती शिल्पा जैन
लेखापरीक्षक

राज्य और राजधानियाँ-एक कविता

भारत मेरा देश महान,
रंग-बिरंगी है इसकी पहचान।
हर राज्य की अपनी शान,
मिलकर गाएँ इनका गान।।

भारत का राज्य **राजस्थान**,
मरूस्थल है इसकी पहचान।
इसकी राजधानी जयपुर,
हवामहल, जलमहल वाला ये गुलाबी नगर।।

समृद्ध राज्य **गुजरात**,
विकास और व्यापार की सदा करता बात।
इसकी राजधानी है गांधीनगर,
जिसमें है सुंदर सा अक्षरधाम मंदिर।।

आओ चलें **हिमाचल प्रदेश**,
सुंदर पर्वतों का है ये प्रदेश।
इसकी राजधानी शिमला,
कुफरी, माल रोड और बर्फ की ज्वाला।।

अब चलते हैं **आंध्र प्रदेश**,
संस्कृति और समुद्र तटों का प्रदेश।
इसकी राजधानी अमरावती,
गोदावरी और कृष्णा कल-कल बहती।।

हमारा प्यारा **अरुणाचल प्रदेश**,
सूरज की पहली किरणों का प्रदेश।
इसकी राजधानी ईटानगर,
ईटा फोर्ट और प्राकृतिकता का ये नगर।।

पूर्वोत्तर का राज्य **असम**,
यहाँ की चाय और बागानों में है दम।

इसकी राजधानी दिसपुर,
हरियाली और सादगी से ये है भरपूर।।

भारत का प्राचीन राज्य **बिहार**,
ज्ञान और इतिहास से भरपूर।
पटना है इसकी राजधानी,
यहाँ प्रसिद्ध हैं लिट्टी चोखा और मधुबनी।।

भारत का राज्य **छत्तीसगढ़**,
जंगलों और संसाधनों का सुंदर गढ़।
इसकी राजधानी रायपुर,
पारंपरिक जनजातियता से है भरपूर।।

देश का सुंदर राज्य **गोवा**,
यहाँ हैं संगीत, समुद्र तट और साफ हवा।
इसकी राजधानी पणजी,
पर्यटकों और दर्शनार्थियों से रहती सजी।।

भारत का मध्यवर्ती राज्य **झारखंड**,
खनिज, पर्वत और हरियाली का अखंड।
इसकी राजधानी रांची,
जलप्रपातों और ठंडी हवाओं से है कांची।।

भारत का सितारा राज्य **हरियाणा**,
दूध-दही और खेती-किसानी इसका गहना ।
इसकी राजधानी चंडीगढ़,
स्वच्छता और सुनियोजित योजनाओं का गढ़।।

भारत का दक्षिणी राज्य **कर्नाटक**,
संगीत और तकनीक का मुख्य घटक।
इसकी राजधानी बेंगलुरु,
सिलिकन वैली नाम से पहचान करूँ।।

दक्षिण में बसा **केरल**,
इसकी पहचान बैकवॉटर व नारियल फल।
इसकी राजधानी तिरुवनंतपुरम,
पहचान कथकली और मोहिनीअट्टम्।।

भारत का सुंदर राज्य **मध्य प्रदेश**,
खजुराहो और सांची स्तूप देते संदेश।
भोपाल है राजधानी प्यारे,
खाते पोहा-जलेबी, मावा बाटी ले चटखारे।।

है विकसित राज्य **महाराष्ट्र**,
उद्योग-सिनेमा बनाते हैं इसे मिनी राष्ट्र।
राजधानी आमची मुंबई इसकी,
गेटवे ऑफ इंडिया पहचान जिसकी।।

पूर्वोत्तर का राज्य **मणिपुर**,
नृत्य, संस्कृति और सभ्यता से भरपूर।
इम्फाल इसकी राजधानी,
मनोहारी सुंदरता और खुशी से जाती पहचानी।।

मेघों का आलय **मेघालय**,
वर्षा-बादल यहाँ बनाते सुंदर वलय।
इसकी राजधानी शिलांग,
पास में हैं चेरापूंजी, उमियम लेक, मालिनॉग।।

आओ चलते हैं अब **मिजोरम**,
पहाड़ों की हरियाली से है ये मनोरम।
राजधानी है आइज़ोल इसकी,
शांति, सुंदरता और प्रकृति पहचान जिसकी।।

भारत का राज्य **नागालैंड**,
वीरता और परंपरा की है ये लैंड।
कोहिमा इसकी राजधानी प्रसिद्ध,
हॉर्नबिल फेस्टिवल यहाँ का बहुत प्रसिद्ध।।

तटवर्ती राज्य **ओडिशा**,
कला, मंदिरों और भगवान का वासा।
इसकी राजधानी पड़ती है भुवनेश्वर,
इसके नजदीक कोणार्क सूर्य मंदिर।।

राज्यों में प्रसिद्ध राज्य **पंजाब**,
इसकी शान खेत-गीत और भूमि दोआब।

इसकी राजधानी चंडीगढ़,
आधुनिकता और सुंदरता का कहलाता गढ़।।

तीन देशों से घिरा **सिक्किम**,
सुख-शांति के मामले में ये है प्रथम।
राजधानी गंगटोक इसकी शान,
शांति और स्वच्छता से बनाई पहचान।।

तमिलनाडु हमारा तटीय प्रदेश,
स्वादिष्ट इडली-डोसा, सांभर का प्रदेश।
चेन्नई बनी है इसकी राजधानी,
सुंदर तटों, मंदिरों और किलों से जाती पहचानी।।

चलो चलते हैं अब **तेलंगाना**,
नवाचार और आईटी का केंद्र जो बना।
इसकी राजधानी हैदराबाद,
बिरयानी और चारमीनार करते आबाद।।

त्रिपुरा भारत का पूर्वोत्तर प्रदेश,
जिससे सटा हुआ है बांग्लादेश।
इसकी सुंदर राजधानी अगरतला,
इसको देखने मैं तो चला।।

विविधता से भरा **उत्तर प्रदेश**,
गंगा-यमुना तहजीब का प्रदेश।
इसकी राजधानी लखनऊ,
इसकी नवाबी देखने मैं बार-बार जाऊँ।।

भारत का देवभूमि राज्य **उत्तराखंड**,
हिमालय श्रृंखला यहाँ की प्रचंड।
इसकी राजधानी देहरादून,
प्राकृतिक सुंदरता और झरनों से है पहचान।।

सभ्यताओं का मिलन **पश्चिम बंगाल**,
गंगा, ब्रह्मापुत्र, हुगली करती कल-कल।
इसकी राजधानी कोलकाता,
यहाँ की मिठाइयाँ और रसगुल्ला सबको भाता।।

केंद्र शासित प्रदेश (Union Territories)

द्वीपीय प्रदेश **अंडमान निकोबार**,
देखने लायक है ये बार-बार।
इसकी राजधानी श्रीविजयापुरम्,
यहाँ के सागर तट मधुरम्-मधुरम्।।

केंद्र शासित प्रदेश **चंडीगढ़**,
रोज गार्डन और रॉक गार्डन का गढ़।
दो राज्यों की पहचान,
पंजाब-हरियाणा का बढ़ाता सम्मान।।

भारत के केंद्र शासित प्रदेश
दमन-दीव और दादर-नगर हवेली।
दमन है इसकी राजधानी,
शांति, सुंदरता और तटों से जाती पहचानी।।

राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र **दिल्ली**,
लाल किला और कुतुब मीनार पहचान निराली।
इसकी राजधानी नई दिल्ली,
देश की सत्ता का गलियारा है नई दिल्ली।।

लक्षद्वीप बसा समुद्र के बीच,
यहाँ प्रसिद्ध स्कूबा डाइविंग और सैंडी बीच।
अरब सागर से लोहा लेती,
राजधानी कवरेत्ती शान है इसकी।।

फ्रेंच सुगंध, शांति महान,
पुडुचेरी की ये पहचान।
इसमें है ओरोबिंदो आश्रम,
देशभक्ति और समाजसेवा ही परम धर्म।।

भारत का मुकुट **जम्मू-कश्मीर**,
झेलम, चेनाब, रावी बहाती नीर।
जम्मू-श्रीनगर राजधानियाँ इसकी,
वैष्णो मंदिर और डल झील पहचान जिसकी।।

अभी नया बना है **लद्दाख** हमारा,
पेंगोंग झील देखने आता जग सारा।
इसकी राजधानी बनी है लेह,
झील, घाटियों और स्तूपों के लिए प्रसिद्ध है यह।।

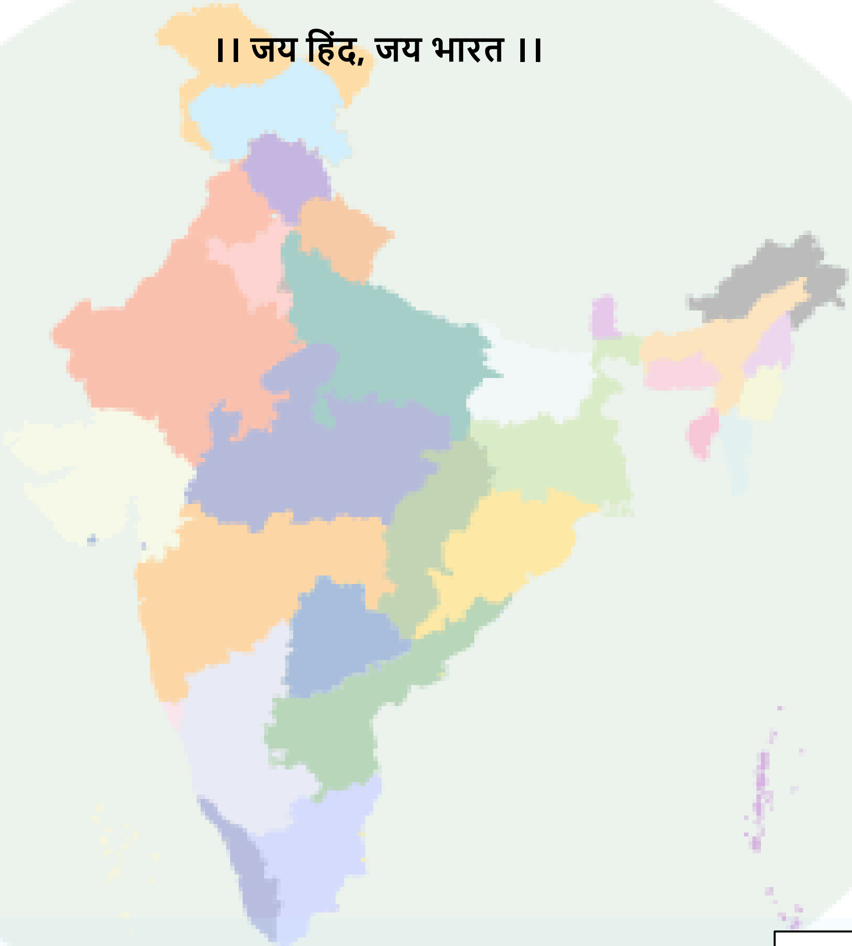

।। जय हिंद, जय भारत ।।

रचनाकार- रिहान सैनी
अतिथि बाल लेखक

ठन-ठन गोपाल या निवेश बेमिसाल?

तनख्वाह आई, बटुआ मुस्काया,
"अमेज़ोन/मिन्त्रा" फिर से याद आया।
"विशलिस्ट" में सपनों की भरमार,
"बस ये आख़िरी है..." हर बार।
पर महीने के आख़िर में अक्सर,
हो जाते हैं "ठन-ठन गोपाल" ।

दोस्त बोलें -"थोड़ा जी ले आज!"
Credit Card भी दे आवाज़।
Swiggy, Netflix, Sale की मार,
सबने मिलकर किया प्रहार।
बैंक बैलेंस चुपके-चुपके,
कह चला- "अलविदा, सरकार" ।

फिर एक दिन अक्ल ज़रा जागी,
सैलरी आते ही 'SIP' कर डाली ।
थोड़ा "म्यूच्यूअल फण्ड" में डाला,
थोड़ा "डेब्ट फंड्स" में संभाला।
नित उठते-गिरते मार्केट ने दिए शुरूआती धक्के,
पर नियमित निवेश के अनुशासन ने बढाए नोट-सिक्के ।

"ज़रूरत है... या बस शौक़ नया?"
हर बार खुद से पूछें ये सवाल भला ।
मेहनत की कमाई, यूँ ही उड़ा देंगे क्या ?
बचत और निवेश में ही है असल हौसला ।
"इमरजेंसी फण्ड" मजबूत बनाकर,
तनाव को करें आप रफूचक्कर ।
'सेल! सेल!' का शोर मन को तो भरमाए,
पर नियमित निवेश ही उज्ज्वल भविष्य बनाए ।

पेंशन के सपने तो हो चले पुराने,
यह तो "पैसिव सेकंड इनकम" के हैं ज़माने ।
निवेश बाज़ार शायद जोखिम का कार्य है,
पर बिना बचत जीवन ही जोखिम का पर्याय है ।

यदि चाहते हैं कि भविष्य में किसी के आगे न फैलाएं हाथ,
तो निवेश कर जीवन में आनंद के बीज बो दीजिये आज ।

अगले माह जब तनख्वाह आए,
दीपावली पर लिए सभी संकल्प दोहराएँ ।
विशलिस्ट को धीरे-धीरे कम करते जाएं,
धन-रूपी लक्ष्मी को बुद्धि से उपयोग में लाएं ।
निरर्थक अपव्यय पर लगाम लगाएं,
बचत-निवेश का सद्‌गुण अपनाएं ।

रचनाकार- सुश्री सुधा शुक्ल
सहायक प्रशासनिक अधिकारी (प्रशासन)

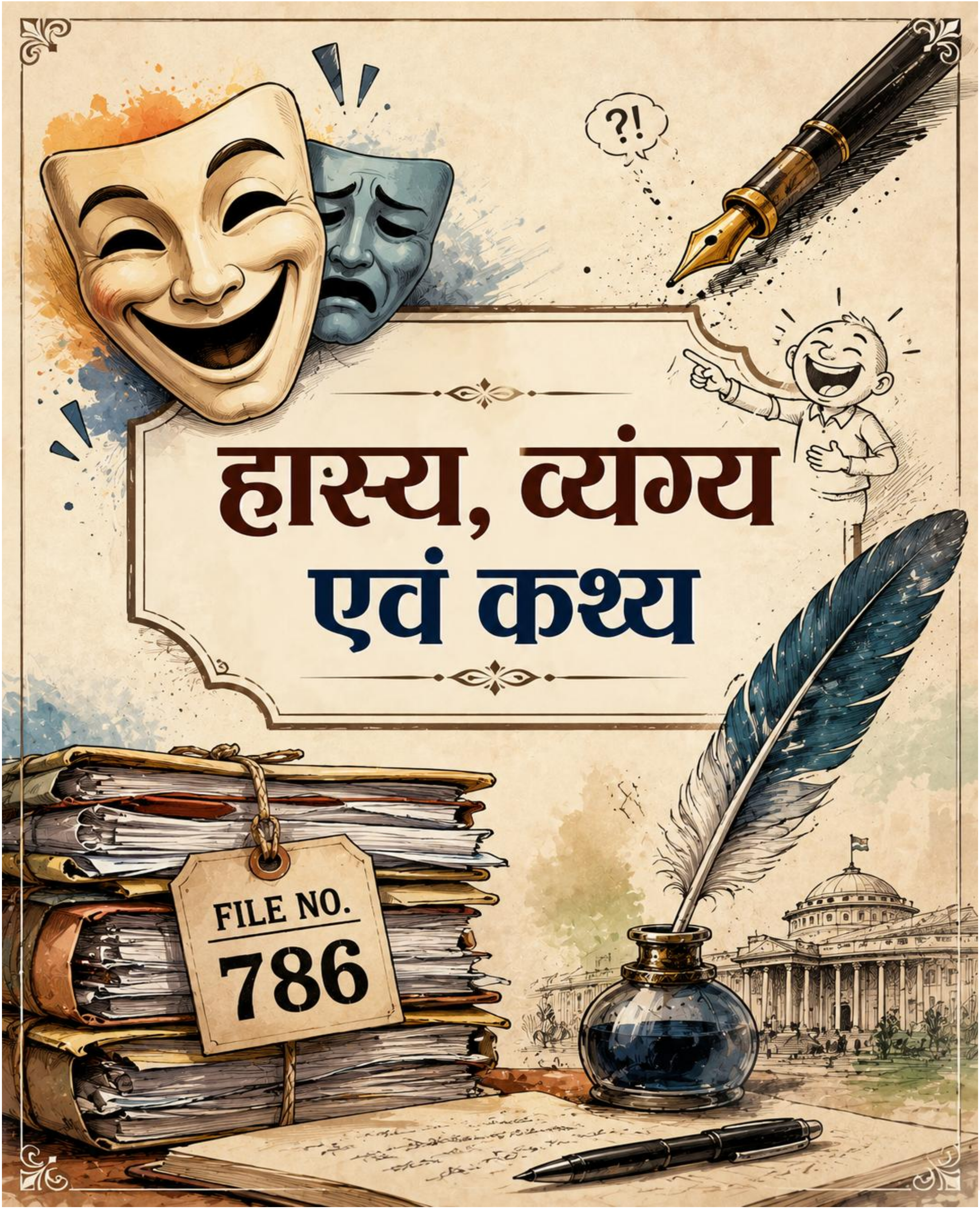
?!
हास्य, व्यंग्य
एवं कथ्य
FILE NO.
786

फाइल नंबर 786 की आत्मकथा

एक पुरानी सरकारी फाइल का व्यंग्यात्मक जीवन वृत्तांत

> **"मैं धूल में दबा हूँ, पर जीवित हूँ-क्योंकि सरकारी रिकॉर्ड में एक बार दर्ज हो जाओ, तो मृत्यु भी अनुमति-पत्र माँगती है और वह पत्र भी... विचाराधीन रहता है।"**

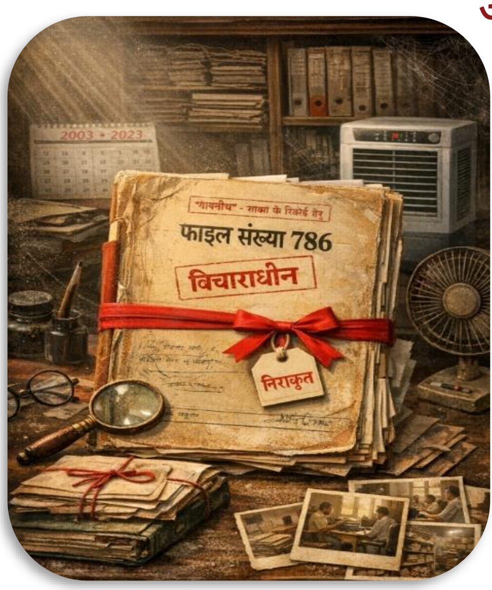

अध्याय 1 : जन्म-लाल सूत और नीली कलम की देन

मेरा नाम फाइल नंबर 786 है। मेरा जन्म किसी शुभ मुहूर्त में नहीं हुआ था। न तो कुंडली बनी, न नामकरण संस्कार हुआ। मेरा जन्म एक सोमवार की सुबह हुआ ठीक उस वक्त जब क्लेरिकल शाखा के संबंधित क्लर्क अपनी मोटी नीली कलम से कुछ लिख रहे थे और उनके सामने रखी चाय ठंडी हो रही थी। उन्होंने ताज़ी सरकारी कागज़ की धजी उठाई सुर्ख़, कड़क, अधिकृत और मुझे इस दुनिया में लाने का कष्ट उठाया।

मेरे प्रथम पृष्ठ पर लिखा था 'विषय : शाखा संख्या 3 हेतु अतिरिक्त कूलर मशीन की माँग।' यह पढ़कर आपको लग सकता है कि यह कोई साधारण माँग थी। पर नहीं। यह माँग किसी राष्ट्रीय संकट से कम नहीं थी। गर्मियों में शाखा संख्या 3 के बाबू लोग पसीने से तर-बतर हो जाते थे, पंखा चलता था पर हवा गर्म थी, और वरिष्ठ अधिकारी के कमरे में बड़ा कूलर चलता था जिसकी ठंडक की ख़बर गलियारे तक आती थी पर शाखा तक नहीं पहुँचती थी।

मेरा शरीर सरकारी कागज़ की पचास धज्जियाँ, एक लाल सूती डोर, दो पीली टिप्पणी-पर्चियाँ और एक मोटी हरी जिल्द। मेरे माथे पर लिखा था **'गोपनीय - शाखा के रिकॉर्ड हेतु'**। जन्म के साथ ही मुझे एक पहचान मिली, एक उद्देश्य मिला और एक ठप्पा भी मिला **'विचाराधीन'**।

संबंधित क्लर्क ने मुझे बड़े प्यार से बाँधा, तीन जगह दस्तखत किए और फिर अपने बगल में रख दिया। मैं सोचने लगा अब काम शुरू होगा! पर यह भ्रम था। अगले तीन दिन मैं उसी मेज़ पर पड़ा रहा। क्लर्क साहब सुबह आते, मुझे देखते, एक बार उठाते, दो पंक्तियाँ पढ़ते और वापस रख देते। चौथे दिन उन्होंने मुझे अनुभाग अधिकारी के पास भेजा। उनके चेम्बर का दरवाज़ा बंद था। परिचारक ने मुझे दरवाज़े के नीचे से नहीं, बगल की मेज़ पर रख दिया और वहाँ मैं अगले पाँच दिन बिताने वाला था।

> "सरकारी फाइल का पहला पाठ यही है - जन्म लो, उद्देश्य पाओ और फिर प्रतीक्षा करो। प्रतीक्षा ही तुम्हारी नियति है, तुम्हारी पहचान है, तुम्हारा धर्म है।"

अध्याय 2 : बालपन -'विचाराधीन' का प्रथम ठप्पा

अनुभाग अधिकारी के पास पहुँचने पर मेरी ज़िंदगी का पहला बड़ा अनुभव हुआ। उन्होंने मुझे उठाया, तीन पृष्ठ पलटे और बोले 'यह मामला सीधे उपनिदेशक के पास जाएगा।' मेरे सीने में उत्साह जागा। उपनिदेशक! यानी बड़े साहब! यानी निर्णय होगा! यानी कूलर आएगा !

पर तभी उन्होंने एक काम किया जो मेरी पूरी ज़िंदगी बदल देने वाला था। उन्होंने एक लाल स्याही वाली मोहर उठाई और मेरे सीने पर जड़ दी-

'विचाराधीन'

यह ठप्पा मेरी नियति बन गया। इसका अर्थ था 'हम सोच रहे हैं।' पर सरकारी दुनिया में 'सोचना' एक असीमित क्रिया है। इसकी कोई समय-सीमा नहीं, कोई परिणाम की बाध्यता नहीं। 'विचाराधीन' का अर्थ है आपकी फाइल जीवित है, पर उसे साँस लेने की इजाज़त नहीं है।

उपनिदेशक जी के कमरे में पहुँचते-पहुँचते मुझे सात दिन लग गए। रास्ते में तीन मेज़ें आईं, दो अलमारियाँ आईं, एक बार मैं गलत शाखा में भी पहुँच गया 'राजस्व शाखा' में, जहाँ एक क्लर्क ने मुझे उठाया, पढ़ा और बोला 'अरे, यह हमारी फाइल नहीं है।' और वापस भेज दिया। इस भटकाव में दो दिन और लगे।

उपनिदेशक महोदय एक सौम्य व्यक्ति थे। उन्होंने मुझे उठाया, पूरा पढ़ा, हुँकारी भरी और एक नोट लिखा।

> **'यह विषय वित्त शाखा से संबंधित है। कृपया संबंधित शाखा से स्वीकृति प्राप्त कर पुनः प्रस्तुत करें। साथ में तीन प्रतियाँ संलग्न करें।'**

तीन प्रतियाँ ! अर्थात मेरे तीन जुड़वाँ भाई पैदा होने वाले थे। उन्होंने कार्बन पेपर लगाकर तीन प्रतियाँ बनाईं — एक थोड़ी धुंधली, एक बिल्कुल धुंधली, और एक इतनी धुंधली कि पढ़ने पर आँखें दुखने लगें। फिर भी तीनों को मेरे साथ जोड़ दिया गया।

वित्त शाखा पहुँचने पर एक नया अनुभव मिला। वहाँ के बाबू वित्त बाबू ने मुझे देखा और बोले 'बजट प्रावधान है?' मैं चुप रहा। मेरे पास इस प्रश्न का उत्तर नहीं था। वे बोले 'बिना बजट प्रावधान के कुछ नहीं होगा। पहले बजट में प्रावधान करवाओ।' और उन्होंने मुझ पर एक और ठप्पा लगाया

'बजट प्रावधान अपेक्षित'

मेरे जीवन में पहला द्वन्द्व आ गया था 'विचाराधीन' और 'बजट प्रावधान अपेक्षित'। दोनों एक साथ। एक तरफ विचार हो रहा था, दूसरी तरफ प्रावधान की प्रतीक्षा थी। दोनों अनंत काल के लिए।

> **"सरकारी फाइल की सबसे बड़ी विडम्बना यह है-जब तक विचार होता है, बजट नहीं होता। जब बजट आता है, विचार बदल जाता है।"**

अध्याय 3 : यौवन दो विभागों की 'संयुक्त सम्पत्ति'

समय बीता। वे क्लर्क साहब का तबादला हो गया। नए साहब आए नए अधिकारी। उन्होंने मुझे देखा, पढ़ा और बोले 'यह फाइल तो बहुत ज़रूरी लग रही है। इस पर क्या हुआ?' किसी ने कहा 'सर, वित्त शाखा में है।' वित्त शाखा में नए अफ़सर आए थे वित्त शाखा के नए अफ़सर। उन्होंने कहा 'यह तो मूल शाखा की फाइल है ।'

तब शुरू हुआ मेरे जीवन का सबसे रोमांचक अध्याय दो विभागों के बीच 'स्वामित्व विवाद'। मूल शाखा के अधिकारी कहते 'यह फाइल हमारी है।' वित्त अधिकारी कहते 'यह फाइल हमारे पास है, इसलिए हमारी है।' यह विवाद इतना गहरा हो गया कि एक बड़ी बैठक बुलाई गई।

बैठक का विवरण इस प्रकार था : तीन घंटे चली बैठक, दो बार चाय आई, एक बार बिस्कुट आया, चार अधिकारियों ने अपनी-अपनी राय दी, दो बार अंग्रेज़ी में नोट लिखे गए, एक बार हिंदी में, और अंत में निर्णय यह हुआ 'फाइल को संयुक्त अभिरक्षा में रखा जाए।

'संयुक्त अभिरक्षा' - यह शब्द सुनकर मुझे लगा जैसे मेरी शादी हो गई हो। अब मेरे दो माता-पिता थे, दो घर थे और दोनों घरों में मेरी कोई ज़िम्मेदारी नहीं थी। सोमवार को मैं इस शाखा में होता था, बुधवार को उस शाखा में। कभी-कभी मैं दोनों जगह एक साथ नहीं होता था यानी बीच के गलियारे में किसी परिचारक की गोद में।

इसी दौर में मेरे साथ कई नए कागज़ात जुड़े। एक 'सम्भावित लागत विवरण', एक 'तकनीकी सलाह', और सबसे अनमोल तीन 'अनापत्ति प्रमाण पत्र'। इन तीनों अनापत्ति प्रमाण पत्रों का अर्थ था कि तीन अलग-अलग विभागों को इस कूलर से कोई आपत्ति नहीं थी। जल विभाग को आपत्ति नहीं, जल आपूर्ति विभाग को आपत्ति नहीं, और लोक निर्माण विभाग को भी आपत्ति नहीं हालाँकि इन तीनों का कूलर से कोई लेना-देना नहीं था।

> **"जहाँ दो सरकारी विभाग झगड़ते हैं, वहाँ फाइल सबसे सुरक्षित होती है - क्योंकि कोई उसे छूना नहीं चाहता।"**

उपकरण बदल गए, काम नहीं बदला: इसी दौरान कार्यालय में टाइपराइटर आया। मेरे विषय में एक नई टंकित प्रति बनाई गई। टाइपिस्ट ने एक अक्षर गलत टाइप किया 'कूलर' की जगह 'कुलर' हो गया। इस गलती को सुधारने के लिए एक अलग टिप्पणी लिखी गई 'पृष्ठ 7 पर 'कुलर' शब्द त्रुटिपूर्ण है, सही शब्द 'कूलर' है।' यह टिप्पणी मेरे साथ जोड़ दी गई। एक शब्द की गलती का स्पष्टीकरण एक नए पृष्ठ में !

फिर वह दिन भी आया जब कार्यालय में कंप्यूटर आया। मेरे बारे में एक 'डिजिटल नोट' बनाया गया। नोट का नाम रखा गया 'File_786_cooler_demand_final.doc'। पर वह फ़ाइल किसी ने सेव नहीं की और अगले दिन कंप्यूटर बंद होने पर वह भी चली गई। मैं बचा रहा अपनी धूल और लाल डोर के साथ।

अध्याय 4 : प्रौढ़ावस्था - रिकॉर्ड रूम का एकांत

एक दिन अचानक मुझे रिकॉर्ड रूम में भेज दिया गया। कारण? किसी को पता नहीं। शायद नए साहब का कमरा छोटा पड़ रहा था। शायद अलमारी भर गई थी। शायद किसी परिचारक ने गलती से मुझे नीचे रख दिया था और फिर किसी ने उठाने की ज़रूरत नहीं समझी।

रिकॉर्ड रूम यह नाम सुनकर लगता है कि यह कोई संग्रहालय होगा, साफ़-सुथरा, व्यवस्थित। पर वास्तव में यह एक अँधेरी कोठरी थी जहाँ वर्षों से फाइलें रहती थीं जैसे किसी भूलभुलैया में खोए यात्री। वहाँ मेरे कई पुराने साथी थे 1987 की टेंडर फाइल, 1994 की सेवानिवृत्ति फाइल, एक 1979 की फाइल जिसका विषय इतना धुँधला हो चुका था कि किसी को याद नहीं था।

रात को हम सब बातें करते थे। 1987 वाली टेंडर फाइल कहती थी 'मेरे टेंडर का परिणाम आज तक घोषित नहीं हुआ।' 1994 वाली सेवानिवृत्ति फाइल कहती 'जिस बाबू की मेरे कारण नियुक्ति हुई थी, वे खुद सेवानिवृत्त हो गए।' और 1979 वाली फाइल बस चुप रहती उसे तो अपना विषय ही याद नहीं था।

रिकॉर्ड वेरीफिकेशन का महोत्सव

एक दिन रिकॉर्ड रूम के बाहर शोर हुआ 'रिकॉर्ड वेरीफिकेशन अभियान!' तीन लोगों की टीम आई। उन्होंने हर फाइल उठाई, नाम देखा, एक रजिस्टर में बड़ा-सा टिक लगाया और वापस रख दिया। टिक लगाने का अर्थ था 'हाँ, यह फाइल अस्तित्व में है।' बस।

मुझे प्रसन्नता हुई कम से कम मेरा अस्तित्व सिद्ध हुआ! मैं ज़िंदा हूँ, मैं गिनती में हूँ! पर जब वे जा रहे थे तब उनमें से एक बोला 'इस कमरे में 847 फाइलें हैं, पर रजिस्टर में 850 दर्ज हैं।' दूसरे ने कहा 'तीन कहाँ गईं?' पहले ने जवाब दिया 'रहने दो, शायद गलत गिनती हो। रजिस्टर में 847 लिख दो।'

यानी तीन फाइलें रजिस्टर से मिट गईं बिना किसी कारण के, बिना किसी जाँच के। मैं काँप उठा। क्या मेरे साथ भी ऐसा होगा? पर नहीं मेरा नंबर 786 था, जो शुभ माना जाता है। शायद इसीलिए मैं बचा रहा।

> **"रिकॉर्ड रूम में फाइलें नहीं रहतीं - आत्माएँ रहती हैं। हर फाइल किसी अधूरे काम की आत्मा है, जो वर्षों से मुक्ति की प्रतीक्षा कर रही है।"**

डिजिटलीकरण का आगमन और नई पीड़ा

वर्षों बाद सरकार ने डिजिटलीकरण का निर्णय लिया। एक युवा कार्यकर्ता आया, उसने मुझे उठाया और कहा 'आपको स्कैन करना है।' मैं रोमांचित हो गया। स्कैन! यानी मैं डिजिटल होऊँगा, सर्वर पर रहूँगा, पूरी दुनिया मुझे देख सकेगी !

उसने मुझे एक बड़ी मशीन के सामने रखा। मशीन चली, रोशनी चमकी और मेरी डिजिटल प्रति बन गई। उसने फाइल का नाम रखा

'786_old_scanned_copy_final_v2_revised_new.pdf'

यह नाम देखकर मेरा मन भारी हो गया। 'old', 'copy', 'revised' ये शब्द मेरी गरिमा को क्या बता रहे थे? पर और दुख तब हुआ जब उसने फाइल डेस्कटॉप पर सेव की एक ऐसे फोल्डर में जिसका नाम था 'Misc_2' और जिसमें पहले से 847 फाइलें थीं। मेरी डिजिटल कॉपी वहाँ दब गई जैसे रिकॉर्ड रूम में मेरी कागज़ी काया दबी थी।

तीन महीने बाद वह कंप्यूटर क्रैश हो गया। बैकअप? नहीं था। मेरी डिजिटल आत्मा चली गई। पर मेरी कागज़ी आत्मा जीवित रही धूल, दीमक और समय की मार सहते हुए भी।

अध्याय 5 : वृद्धावस्था आरटीआई का भूचाल

अब मैं बहुत पुराना हो गया था। मेरे किनारे पीले पड़ गए थे, स्याही जगह-जगह से उड़ गई थी, लाल डोर फीकी पड़ गई थी। पर मैं था और यही मेरी सबसे बड़ी उपलब्धि थी।

फिर एक दिन बाहर से एक आवेदन आया-सूचना का अधिकार अधिनियम के तहत। एक नागरिक- आवेदक नागरिक ने पूछा था :

> 'वर्ष 2003 में शाखा संख्या 3 के लिए कूलर मशीन की जो माँग की गई थी फाइल नंबर 786 उस पर क्या कार्रवाई हुई? कूलर लगा या नहीं?'

विभाग में हड़कंप मच गया। 'फाइल नंबर 786 कहाँ है?' अधिकारी पूछने लगे। किसी को पता नहीं था। तीन शाखाओं में ढूँढा गया मिला नहीं। फिर किसी ने कहा 'शायद रिकॉर्ड रूम में हो।' रिकॉर्ड रूम खुला। रोशनी जलाई गई। धूल उड़ी। और वहाँ एक कोने में, दो भारी फाइलों के बीच, दबा हुआ मैं मिला।

मुझे निकाला गया। बाहर की रोशनी में आते ही मेरी आँखें चौंधिया गईं। इतने वर्षों बाद प्रकाश! एक अधिकारी ने मुझे उठाया, झाड़ा, पलटा और पढ़ा। फिर धीरे से बोले 'यह तो 2003 की फाइल है।' दूसरे ने

पूछा 'कूलर आया था?' पहले ने कहा 'पता नहीं।' तीसरे ने पूछा 'कोई अंतिम आदेश है इसमें?' पहले ने कहा 'नहीं, बस 'विचाराधीन' का ठप्पा है।'

तीस दिन की जाँच और परिणाम

आरटीआई का जवाब देने के लिए तीस दिन का समय था। इन तीस दिनों में क्या-क्या हुआ, यह मैं प्रत्यक्षदर्शी था। पाँच अधिकारियों ने मुझे पढ़ा, चार ने नोट लिखे, तीन ने एक-दूसरे को अग्रेषित किया, दो ने 'अतिरिक्त जानकारी हेतु' पत्र लिखे और एक ने अंत में जवाब दिया।
जवाब क्या था? सुनिए

> 'फाइल नंबर 786 का अभिलेख उपलब्ध है। इस फाइल पर कार्रवाई प्रक्रियाधीन थी। वर्तमान स्थिति की जानकारी के लिए संबंधित शाखा से संपर्क करें।'

अर्थात तीस दिन की मेहनत, पाँच अधिकारी, चार नोट, और परिणाम? 'संबंधित शाखा से संपर्क करें।' वही संबंधित शाखा जिसने मुझे वर्षों पहले रिकॉर्ड रूम में भेजा था !

आवेदक नागरिक ने दूसरी अपील की। अपीलीय अधिकारी ने एक और नोट लिखा। फाइल में एक और पृष्ठ जुड़ गया। मैं और मोटी हो गई। वज़न बढ़ गया ज्ञान का नहीं, कागज़ का।

> **"आरटीआई से डर नहीं लगता आरटीआई के जवाब से लगता है। जवाब ऐसा हो कि सवाल पूछने वाला और सवाल पूछना ही भूल जाए।"**

अध्याय 6 : अंतिम अध्याय नवीनीकरण का प्रस्ताव

मेरी कहानी का सबसे विचित्र अध्याय अभी बाकी था। कार्यालय में 'पुरानी फाइलों के नवीनीकरण अभियान' की घोषणा हुई। निर्देश था 'दस वर्ष से अधिक पुरानी अनिर्णीत फाइलों का पुनर्मूल्यांकन किया जाए।' मैं बीस वर्ष पुरानी थी। स्पष्ट रूप से इस अभियान की श्रेणी में आती थी। एक युवा अधिकारी युवा अधिकारी, जो अभी-अभी परिवीक्षा पर आए थे को मेरी समीक्षा का काम सौंपा गया।

युवा अधिकारी ने बड़े उत्साह से मुझे पढ़ा। उनकी आँखों में चमक थी नए अफ़सर की चमक, जो अभी तक फाइलों की दुनिया से परिचित नहीं थे। वे बोले 'इतनी सरल माँग है! सिर्फ एक कूलर! बीस साल में भी फैसला नहीं हुआ ?'

उन्होंने एक सारगर्भित नोट लिखा

> 'फाइल संख्या 786 में वर्णित माँग अत्यंत साधारण एवं न्यायसंगत है। शाखा 3 के कर्मचारियों की कार्यदशा में सुधार के लिए कूलर की व्यवस्था तत्काल की जानी चाहिए। अनुशंसा की जाती है कि इस विषय पर शीघ्र निर्णय लिया जाए।'

यह नोट पढ़कर मेरी आत्मा को अपार शांति मिली। बीस वर्षों में पहली बार कोई था जिसने सीधे, स्पष्ट भाषा में कहा 'यह होना चाहिए।'

पर अगले दिन क्या हुआ? युवा अधिकारी के वरिष्ठ अधिकारी ने उनका नोट पढ़ा और एक नई टिप्पणी जोड़ी

'युवा अधिकारी का उत्साह सराहनीय है। किंतु इस प्रकरण में वित्त विभाग की स्वीकृति, तकनीकी समिति का प्रतिवेदन, और उच्चाधिकारी का अनुमोदन आवश्यक है। कृपया तदनुसार कार्रवाई करें।'

युवा अधिकारी की चमक थोड़ी फीकी पड़ी। पर वे हिम्मती थे। उन्होंने वित्त विभाग को पत्र लिखा। वित्त विभाग ने कहा '**इस वर्ष का बजट बंद हो चुका है। अगले वर्ष के बजट में प्रावधान करें।'** युवा अधिकारी ने अगले वर्ष के बजट में प्रावधान किया। पर तब तक उनका भी तबादला हो गया।

नए अधिकारी आए। उन्होंने मुझे देखा और पूछा 'यह क्या है?' किसी ने बताया 'कूलर वाली फाइल।' उन्होंने कहा 'अच्छा, रहने दो, अभी प्राथमिकता और भी है।' और मुझे फिर से कोने में रख दिया गया।

> **"सरकारी दुनिया में उत्साह एक संक्रामक रोग है जो तबादले से ठीक हो जाता है।"**

अध्याय 7 : दार्शनिक विचार एक फाइल की आत्मा

इतने वर्षों में मैंने बहुत कुछ देखा। मैंने अधिकारी आते-जाते देखे। मैंने सरकारें बदलते देखीं। मैंने नीतियाँ बनते और बदलते देखीं। मैंने टाइपराइटर से कंप्यूटर, कंप्यूटर से लैपटॉप, लैपटॉप से टैबलेट की यात्रा देखी। पर एक चीज़ नहीं बदली 'विचाराधीन' का ठप्पा। मुझे लगा क्या यह ठप्पा ही सरकारी व्यवस्था का सार है? 'हम सोच रहे हैं' यह भाव जो कभी क्रिया नहीं बनता, जो कभी निर्णय नहीं बनता, जो हमेशा प्रक्रिया में रहता है। पर मैं निराशावादी नहीं हूँ। मैंने यह भी देखा है कि इन्हीं फाइलों में कहीं कोई ऐसा नोट होता है जो किसी के जीवन को बदल देता है। किसी का पेंशन आदेश, किसी का सेवा प्रमाण पत्र, किसी की पदोन्नति का आदेश ये सब फाइलों में ही रहते हैं। फाइल केवल बोझ नहीं है फाइल एक भरोसा भी है, एक अभिलेख भी है, एक गवाह भी है।

मैं एक फाइल हूँ। मैं सरकारी व्यवस्था का वह अविभाज्य अंग हूँ जो सबकुछ देखता है, सबकुछ जानता है, पर बोल नहीं सकता। मैं हर बाबू के हस्ताक्षर का गवाह हूँ। हर अधिकारी की टिप्पणी का साक्षी हूँ। हर बैठक के निर्णय का दस्तावेज़ हूँ। आज शाखा 3 में एक नया कूलर लगा है वह 2019 में किसी अन्य माध्यम से मँगाया गया था, बिना किसी फाइल के, बिना किसी प्रक्रिया के। पर मैं आज भी यहाँ हूँ क्योंकि मेरा विषय 'अनिर्णीत' है, और जब तक विषय अनिर्णीत है, फाइल नष्ट नहीं हो सकती।

> **"कूलर आ गया, पर फाइल नहीं गई-क्योंकि फाइल का जन्म समस्या से नहीं, प्रक्रिया से होता है। और प्रक्रिया का अंत नहीं होता।"**

अध्याय 8 : अंतिम इच्छा

आज मैं जब अपना जीवन देखता हूँ, तो न दुख होता है, न पछतावा। हाँ, थोड़ी थकान ज़रूर है वर्षों की धूल, वर्षों की प्रतीक्षा, वर्षों के 'विचाराधीन' ठप्पे की थकान। पर मेरे भीतर एक संतोष भी है। मेरे साथ जुड़े हर पृष्ठ पर किसी न किसी का हस्ताक्षर है। कोई सेवानिवृत्त हो गया, कोई इस दुनिया से विदा हो गया, कोई आज भी किसी कार्यालय में है। पर उनके हस्ताक्षर उनकी नीली, लाल, काली स्याही के हस्ताक्षर मेरे पृष्ठों पर अमर हैं। मेरी अंतिम इच्छाएँ बहुत सरल हैं। पहली इच्छा मेरे पहले पृष्ठ पर लिखे 'विचाराधीन' ठप्पे की जगह 'निराकृत' लिखा जाए। दूसरी इच्छा मुझे लाल सूत से नहीं, एक सुंदर लाल रिबन से बाँधा जाए। तीसरी इच्छा यदि कभी कोई नीति-निर्माता इस आत्मकथा को पढ़े, तो वह समझे कि हर फाइल के पीछे एक इंसान की ज़रूरत होती है, एक उम्मीद होती है, एक प्रतीक्षा होती है। और मेरी सबसे बड़ी इच्छा यह है कि आने वाली पीढ़ियों की फाइलें मेरी तरह बीस वर्ष रिकॉर्ड रूम में न बिताएँ। वे जन्म लें, काम पूरा करें और सम्मान के साथ 'निराकृत' हों।

रचनाकार- दीपक भारद्वाज
यंग प्रोफेशनल

व्यंग्य लेखः हर घर तेंदुआ दर्शन योजना

तेंदुओं के छोटे शावक बहुत दिनों से देख रहे थे कि जंगल में रोज कुछ गाड़ियाँ आती हैं और किसी चीज की तलाश में रहती हैं। ज्यादातर लोग हमारी फोटो भी खींचते हैं। फिर कुछ समय बाद लौट जाते हैं। यही क्रम चलता रहता है। उन्होंने सोचा कि आखिर माजरा क्या है?

यह जानने के लिए उन्होंने अपने बड़े-बुजुर्गों का रूख किया और उनसे ये माजरा पूछा। उन्होंने बताया कि खुली जिप्सियों में बैठे ये लोग उनकी एक झलक पाने को आते हैं। हमारी फोटो अपने कैमरे में कैद करते हैं। घर जाके सबको बताते हैं कि उन्होंने तेंदुआ देखा। ये जानकर छोटे शावक आश्चर्यचकित हो गये। एक तेंदुए ने प्रस्ताव रखा कि क्यों ना हम ही बीच-बीच में आबादी की तरफ जाके इन लोगों को दर्शन दे दें। थोड़ी देर के लिए तेंदुआ समुदाय में सन्नाटा छा गया। धीरे-धीरे कुछ तेंदुओं ने इस बात पर सहमति जताई। कुछ पढे-लिखे तेंदुओं ने बताया कि आजकल महंगाई भी बढ़ गयी है इसलिए हर कोई जंगल सफारी करने नहीं आ सकता पर बहुत से लोग जंगली जानवर देखना चाहते हैं।

जंगल सफारी की महंगी टिकट, ऑनलाइन स्लॉट की मारामारी और टूरिस्टों की अंतहीन भीड़ को देखते हुए तेंदुआ प्रजाति ने आखिरकार बड़ा निर्णय ले ही लिया "**जब सब जनता जंगल नहीं आ सकती, तो हम ही शहर क्यों न चले जाएँ ?**" और इसी क्रांतिकारी सोच के साथ शुरू हुई अनोखी योजना '**हर घर तेंदुआ दर्शन योजना**'**!**

जंगली जानवरों ने सहमति जताई कि अगर यह योजना सफल रहती है तो जंगल के अन्य जानवर जैसे शेर, चीता, पैंथर आदि भी इस बात से प्रेरणा लेकर इंसानी आबादी का रूख कर सकते हैं। यह योजना खुद तेंदुआ समुदाय द्वारा चलाई जा रही है, और इसे वन्यजीवों की "आउटरीच गतिविधि" भी माना जा रहा है। योजना के तहत तेंदुए तय समय पर शहरों में पहुँचकर लोगों को अचानक दर्शन देते हैं, जिससे लोग और प्रशासन—दोनों के दिलों की धड़कनें तेज़ हो जाती हैं।

अध्याय-1: योजना की शुरुआत, पायलट प्रोजेक्ट और तेंदुओं की मीटिंग

सूत्रों के मुताबिक, इस योजना को शुरू करने से पहले तेंदुआ समाज में एक लंबी मीटिंग हुई जिसमें सभी महत्त्वपूर्ण मुद्दों पर विस्तार से चर्चा हुई।
स्थान: पहाड़ी के ऊपर पुराना बरगद का पेड़, झालाना तेंदुआ रिजर्व फॉरेस्ट जयपुर ।
अध्यक्ष: बुजुर्ग तेंदुआ (15 साल का अनुभवी जंगली तेंदुआ)
एजेंडा: "जनता तक सीधी पहुँच कैसे बनी रहे?"

मीटिंग में एक युवा तेंदुए ने बात की शुरूआत की- "मित्रों एवं युवा-बुजुर्ग साथियों, जंगल सफारी में आने वाले लोग हमें ऐसे देखते हैं जैसे कोई अचंभा दिख रहा हो। कैमरे चमकते रहते हैं, चीखें निकलती रहती हैं।

हमें भी कभी-कभी एकांत चाहिए। क्यों न कुछ तेंदुए शहर जाकर खुद जनता से मिलें? वे भी खुश होंगे और हम भी शांति से रहेंगे।"

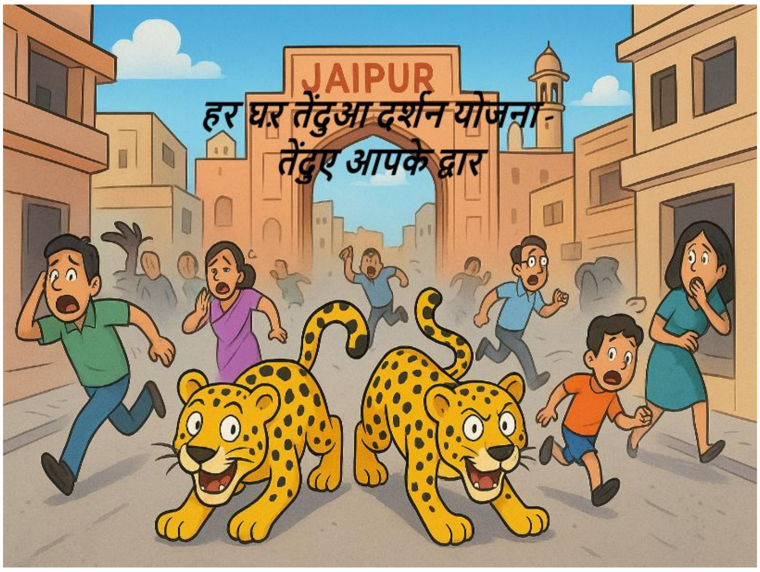

इस पर बुजुर्ग तेंदुए ने दाढ़ी सहलाते हुए कहा, "विचार तो बहुत अच्छा है। पर नये इलाके में रोमांचक काम करना और नयी योजना शुरू करना आसान काम नहीं है। पहले कोई छोटा शहर चुनो, जहाँ लोग मिलनसार हों।"

बहुत विचार-विमर्श के बाद "पायलट प्रोजेक्ट" के लिए चुना गया **जयपुर शहर!**

कारण: यहाँ लोग गुलाबी शहर को कैमरे में कैद करने में इतने व्यस्त रहते हैं कि तेंदुए आराम से घूम सकेंगे और कुछ लोगों को दर्शन भी हो जाएँगे।

अध्याय 2: इंसानी आबादी में तेंदुओं का प्रवेश – जनता की प्रतिक्रियाएँ

योजना के पहले ही दिन एक युवा तेंदए ने जयपुर की एक शांत-सी बस्ती में प्रवेश करके 'फील्ड विजिट' का आगाज किया। उसे उम्मीद थी कि लोग फूल-मालाएँ लेकर स्वागत करेंगे, सेल्फी लेंगे और शायद कुछ बिस्किट वगैरह भी ऑफर करेंगे।

दूसरा तेंदुआ जो हट्टा-कट्टा और पढ़ा-लिखा मालूम होता था उसे मुख्यमंत्री जी के आवास की तरफ और सी-स्कीम जैसी पॉश कॉलोनियों में दर्शन करवाने के निर्देश मिले। एक छोटे तेंदुए को भी मैदान में उतारा गया। उसे आस-पास के इलाकों जैसे बजाज नगर, एजी कॉलोनी, अनिता कॉलोनी, मालवीय नगर आदि में दर्शन की जिम्मेदारी दी गयी। साथ ही उसे कम उम्र के बच्चों को दर्शन देने पर ध्यान देने के लिए कहा गया। पर उनको देख कर अचंभा हुआ कि लोग उनसे मिलने और देखने नहीं आ रहे थे बल्कि घबराकर छुप रहे थे। उनको लगा कि कुछ गलती हुयी है। लोग उनको देखकर विपरीत दिशाओं में दौड़ लगा रहे थे।

ऐसा लगा जैसे भूकंप आ गया हो और लोग बदहवास से इधर-उधर भाग रहे हों। उस तेंदुए को सबसे ज्यादा दुख तब हुआ जो गलती से **मुख्यमंत्री आवास** की तरफ पहुँच गया। उसे उम्मीद थी कि यहाँ तो कम से कम कोई बोलेगा-"आइए तेंदुआ जी, बैठिए... चाय-नाश्ता करिए.."

लेकिन हुआ उल्टा। सारे सुरक्षाकर्मी, पत्रकार और कर्मचारी अपनी-अपनी गाड़ियों के पीछे, पौधों के पीछे और खंभों के पीछे छिपने लगे। एक गार्ड तो फुसफुसाते हुए बोला, "तेंदुआ आया है या भूत? सब भाग क्यों रहे हैं?" तेंदुआ बेचारा सोचने लगा "अरे भई, जंगल से मिलने हम आए हैं, ये लोग छुपे जा रहे हैं! हमारी कोई इज्जत ही नहीं है। क्या गलत समय पर आ गया?"

अध्याय 3: प्रशासन की हलचल और वन विभाग की व्यस्तता

खैर, एक तेंदुए ने एक खाली मकान में आसरा लिया और अपने आने की प्रतिक्रिया जानने के लिए सुबह के अखबार का इंतजार करने का फैसला लिया।

सुबह अखबार आया और तेंदुआ पढ़ने लगा- **तेंदुए के आतंक से शहर में हड़कंप !!!!!**
एक फोटो भी छपी थी जिसमें कुछ लोग तेंदुए के डर से भागते नजर आ रहे थे। उसने ध्यान से देखा कि एक व्यक्ति तो वही था जो कुछ दिन पहले जंगल सफारी के लिए आया था और तेंदुआ देखने के लिए बहुत बेताब था। तेंदुआ दर्शन योजना से सबसे अधिक हड़कंप मचा वन विभाग में। एक अफसर ने फाइलें हवा में उछालते हुए कहा "ये कौन सी योजना है भई? हमें क्यों नहीं बताया गया?" दूसरा बोला- "सर, ये सरकारी योजना नहीं है, यह तेंदुआ समुदाय की अपनी निजी पहल है !" तभी तीसरा अधिकारी बोला, "तो अब हमें क्या करना होगा?" जवाब मिला, "फोटो खिंचवानी होगी, वीडियो बनवानी होगी और जनता को समझाना होगा कि तेंदुआ उनसे मिलने आया है, हमला करने नहीं।"

इस बीच, सोशल मीडिया पर #LeopardInCity ट्रेंड करने लगा। लोग मीम बनाने लगे:

- "तेंदुआ आया घर के पास, लोगों की अटकने लगी साँस!"
- "अगला कौन? शेर या चीता या पैंथर?"
- "तेंदुआ आपके द्वार, मत निकलो घर से बाहर !"

कुछ लोगों ने तो घर की खिड़की से झाँकते हुए कहा, "वाह! ये तो मुफ्त में जंगल सफारी हो गई!" इसी प्रकार थोड़ा घूमते हुए और थोड़ा छुपते हुए दिन निकल गया। तेंदुए ने डब्ल्यूटीपी, गौरव टावर और एमएनआईटी के बारे में भी बहुत सुन रखा था। शाम को एक चक्कर उधर भी लगा लिया। लेकिन वहाँ भी लोग ऐसे डर के छुप रहे थे जैसे कोई भूत आ गया हो। तेंदुए को इंसानों का यह व्यवहार समझ में नहीं आया।

अध्याय 4: मनुष्यों की हरकतों से तेंदुओं का दुख

बाद में एक तेंदुए ने इंटरव्यू में बताया "हमने सोचा था कि शहर में आकर लोगों से दोस्ती करेंगे। पर यहाँ तो कोई बातचीत करता ही नहीं। सब भागते हैं, वीडियो बनाते हैं या ड्रोन उड़ाते हैं। हम तो बस थोड़ा घूमना और मनोरंजन करना चाहते थे।"

दूसरे तेंदुए ने शिकायत की "जंगल में कम से कम शांति तो थी। शहर में तो हॉर्न, ट्रैफिक, और लोगों की चीख-पुकार... ऐसा लगता है जैसे हम ही गड़बड़ कर रहे हों।"
कुछ तेंदुए तो वापस जंगल लौटते समय एक-दूसरे से बोले, "भाई, ये शहर वाले बहुत टेंशन में रहते हैं। इन्हें देखकर ही घबराहट होने लगती है। चल जंगल में ही आराम है!"
छोटा शावक तो ज्यादा भ्रमित था, "इंसान तो दोगला प्राणी मालूम होता है। जंगल सफारी के माध्यम से हमें देखने के लिए लालायित रहता है और हम खुद ही दर्शन देने आ रहे हैं तो पैंट गीली हो रही है।"

अध्याय 5: योजना का भविष्य और अन्य जानवरों की तैयारी

तेंदुआ दर्शन योजना की खबर जंगल के अन्य जानवरों तक भी पहुँच गई।
शेर ने गरजते हुए कहा, "अगर जनता इतनी ही उत्सुक है, तो हम भी रविवार को कहीं निकलते हैं !"

चीते ने कहा, “मैं ओला बुक कर लूँ क्या? या शहर तक दौड़ लगाकर ही जाना है।”
हाथी तो तैयार खड़ा हो गया, बोला “मेरा तो सोचो भी मत। मैं जहाँ भी जाऊँगा, ट्रैफिक जाम घोषित हो जाएगा !” लेकिन तेंदुओं ने बाकी जानवरों को सलाह दी “भाई, पहले शहर वालों के दिल मजबूत होने दो। अभी तो हमारा ही स्वागत पूरा नहीं हुआ है !”

अध्याय 6-तेंदुओं का सच से सामना

एजी कॉलोनी में छिपे छोटे तेंदुए ने एक घर में चले टीवी में देखा और सुना-शहर में तेंदुओं के अतिक्रमण से दहशत...बच्चों और बड़ों की सिट्टी-पिट्टी गुम।
वह मासूम तो उन बच्चों से खेलना चाहता था। उन बड़ों का जंगल सफारी का खर्चा बचाना चाहता था।

दूसरे तेंदुए को पता चला कि उनको पकड़ने के लिए जाल और पिंजरे बिछाए जा रहे हैं। वह उदास हो गया और बिना 'एजिक्ट मीटिंग' किये ही 'फील्ड विजिट' को समय पूर्व ही खत्म कर वापस जाने के प्रयास में जुट गया। मुख्यमंत्री जी के आवास की तरफ आये तेंदुए को पकड़ने के लिए विशेष प्रशिक्षित टीम को बुलाया गया और एक दिन की मशक्कत के बाद पकड़कर वापस जंगल में छोड़ दिया गया। तेंदुओं को यह सीख मिली कि-

“शहर सफारी दिखने में मज़ेदार है, पर उसमें बहुत जोखिम है खासकर जब लोग छिपकर मोबाइल से वीडियो बनाते हों। और दर्शन देने पर डर के भागते हों।”

इंसानों के अजीब व्यवहार के कारण इस तरह यह योजना पहले ही हफ़्ते में “अस्थायी रूप से स्थगित” कर दी गई और तेंदुओं ने इसकी समीक्षा करने की घोषणा की और कहा
“हम जंगल में ही बेहतर हैं। जनता चाहे तो जंगल में आकर ही दर्शन ले ले!”

रचनाकार- दीपक सैनी
सहायक प्रशासनिक अधिकारी

विचार
एवं
विमर्श

स्टेटस अपडेट

आज के समय में सोशल मीडिया से शायद ही कोई व्यक्ति हो जो अछूता रह गया हो। सोशल मीडिया का मायाजाल आज सम्पूर्ण मानवता पर छाया हुआ है।

"मैं तो बस थोड़ी देर सोशल मीडिया चला रहा था" यह वाक्य अब आधुनिक जीवन का वह पर्दा बन चुका है, जिसके पीछे हम अपने आलस्य, ध्यानभंगता और समय की बर्बादी को बड़ी सफाई से छुपा लेते हैं।

सोशल मीडिया की शुरुआत जुड़ाव और सूचना के आदान-प्रदान के उद्देश्य से हुई थी व यह इस उद्देश्य में परिपूर्ण भी रहा। परन्तु आज यह एक समय की बर्बादी का माध्यम बन चुका है और वह भी हमारी स्वीकृति से। जब हम सोचते हैं कि "मै थोड़ी देर ही देखूंगा", तो शायद यह 10-20 मिनट का इरादा होता है, लेकिन उँगलियों की स्क्रॉलिंग रुकती है 1-2 घंटे बाद। और इससे हमारे अन्दर आत्मग्लानी (गिल्ट), थकान और अधूरी जिम्मेदारियाँ जैसी नकारात्मक भावनाएँ जन्म लेती हैं ।

इस लेख के माध्यम से मैं अपने जीवन का एक किस्सा साझा करना चाहता हूँ। मेरा एक परम मित्र है जो की मेरे साथ ही प्रतियोगी परीक्षाओं तैयारी कर रहा था। सरकारी सेवा में मेरा चयन होने पर मैं अहमदाबाद में नौकरी करने चला गया परन्तु उसका चयन अभी होना बाकी था व वह जयपुर में ही रहकर तैयारी कर रहा था। उसके बाद करीब एक वर्ष पश्चात् मेरी उससे भेंट हुई। वह कुछ परेशान दिख रहा था तो मैंने पूछा कि बात क्या है? इस पर उसने बताया की वह अच्छे से तैयारी नहीं कर पा रहा है जिससे उसका चयन सरकारी सेवा में नहीं हो पा रहा है। इस पर मैंने उससे इसका कारण पूछा तब उसने बताया कि वह प्रतिदिन पढने बैठता है पर समय कहाँ चला जाता है पता ही नहीं चलता और पढाई अच्छे से नहीं हो पाती।

तत्पश्चात उसने बताया कि जो सोशल मीडिया एक- एक करके सभी लोगो के मोबाइल में अपनी जगह बना चुका है वह भी उससे अछूता न रह सका। शुरूआत में तो उसे लगा की ये एप्लीकेशंस तो ईश्वर का आशीर्वाद बनकर आयी हैं । किसी से भी संपर्क करना कितना आसान बना दिया है इन्होने। चूँकि वह एक अंतर्मुखी व्यक्ति है उसे लगता था कि अब किसी से संपर्क करने के लिए फोन करने की ज़रूरत ही नहीं सिर्फ मैसेज ही काफी था। उन दिनों व्हाट्सऐप इनमे सबसे अधिक प्रचलित था। पढाई के दौरान यदि उसके सगे सम्बन्धी या मित्रगण मैसेज करते तो वह उनके प्रतिउत्तर देता रहता था। वह किसी को मैसेज करता, फिर उनके प्रतिउत्तर का इंतजार करता इतनी देर उसका पढने में मन नहीं लगता था क्यूंकि उसका ध्यान सामने वाले के उत्तर पर ही लगा रहता था जैसे ही वह प्रत्युत्तर देता तो एक नया मैसेज फिर से उसके फोन में आता तथा वह फिर से उसका प्रत्युत्तर देता, इस तरह जो बात 2 मिनट में हो सकती थी उसके लिए उसे 10 मिनट से ज्यादा लग जाते, कभी कभार तो अत्यधिक समय लग जाता था तथा यह हर रोज़ होता था व बार-बार होता था। इसके अतिरिक्त उन दिनों व्हाट्सऐप का एक नया फीचर आया था जिसका नाम था "स्टेटस अपडेट"। इस फीचर में व्हाट्सऐप उपयोगकर्ता अपने जीवन से जुडी अच्छी-बुरी हर तरह की बातें

साझा कर सकता है। सभी की भांति उसे भी वह बहुत अच्छा लगा। वह धीरे धीरे स्टेटस देखने लगा, फिर और देखने लगा, बार बार देखने लगा, 8-10 दिनों में वह इसका आदि हो चुका था। उससे जुड़े लोग अपने जीवन से जुडी बातें स्टेटस पर साझा करते व वह उन्हें देखने हेतु लालायित रहता। धीरे धीरे उसे दूसरे के जीवन में क्या चल रहा है इस बात को जानने में अत्यधिक रूचि रहने लगी। वह हर 2 से 5 मिनिट में अपना व्हाट्सऐप चेक करता कि कहीं किसी ने कुछ नया तो अपडेट नहीं किया। स्टेटस देखकर उसपर टिप्पणी देता था जो एक नयी मैसेज की श्रृंखला शुरू कर देती थी। धीरे धीरे वह भी अपने स्टेटस पर जीवन से जुडी बातें साझा करने लगा। ऐसा करने पर तो वह और अधिक लालायित रहता की किस किसने उसका स्टेटस देखा व किसने उस पर क्या टिप्पणी की। किसने सकारात्मक टिप्पणी की, किसने नकारात्मक टिप्पणी की। किसने देखकर भी टिप्पणी नहीं की। स्टेटस लगाने से पहले भी वह इसी सोच विचार में लगा रहता कि क्या स्टेटस लगाऊ। कैसी फोटो लगाऊ। कौन उस स्टेटस पर किस प्रकार की प्रतिक्रिया दे सकता है। तथा लगाने के बाद यदि देखने वालों ने सकारात्मक टिप्पणी की तो वह कितनी सकारात्मक थी। क्या वे उसकी अपेक्षा के अनुकूल थी तथा यदि वे नकारात्मक थी तो सामने वाले ने क्यों नकारात्मक टिप्पणी दी या अगर देखकर भी कोई टिप्पणी नहीं दी तो क्यों नहीं दी, इसी तरह के विचार पूरे दिन मन में चलते रहते थे। सगे सम्बन्धी या मित्रगण स्टेटस पर टिप्पणी करते तो उनके प्रतिउत्तर देता रहता था। इसके अतिरिक्त उसने बताया कि वह कई व्हाट्सप्प ग्रुप मे शामिल था उन पर भी पूरे दिन मैसेज आते रहते व ज्यादातर समय वह उन्हे पढ़ता था या उनके उत्तर देता रहता था। इन सब में उसका पूरा दिन कहाँ निकल जाता उसे पता ही नहीं चलता था। और सबसे खास बात यह थी कि बहुत दिनों तक तो उसे एहसास भी नहीं हुआ कि वह कुछ गलत कर रहा है। कुछ दिन बहुत दिनों में बदल गए पर कुछ नहीं बदला। इसी प्रक्रिया का दोहराव होता रहता। धीरे धीरे परीक्षाओं के परिणामों में यह समय की बर्बादी झलकने लगी। इसके चंगुल में वह ऐसा फंसा की मुझसे वार्तालाप के दौरान तक वह निकल नहीं पाया था।

उसने बड़ी निराशा से पूरा वाकिया सुनाया। उसके चेहरे से साफ़ पता चल रहा था की उसे अपने किये पर पछतावा है परन्तु इसका समाधान नहीं। उसकी नजरें मुझे आस से देख रही थी कि मैं ही कोई समाधान निकालूँ इस समस्या का। मैं बिना देरी किये उसे नजदीकी फोन की दुकान पर लेकर गया व उसे नया फोन दिलवाया, पर इस बार वह स्मार्टफोन नहीं था। वह बिलकुल सादा फोन था जो कोई सोशल मीडिया चलने लायक नहीं था। उसमें उसकी सिम बदली व उसे दे दिया। उसका स्मार्टफोन मैने रख लिया व कहा कि जब पास हो जाए तब ले लेना।

कुछ दिनों पहले उसका फोन आया मेरे पास व उसने मेरा आभार व्यक्त करते हुए खुशखबरी दी कि वह प्रतियोगी परीक्षा में सफल हो गया है व उसकी नौकरी लग गई है। इसके साथ उसने एक संकल्प भी लिया कि चाहे अब उसके पास कितना भी समय हो सोशल मीडिया का उपयोग बिलकुल नियंत्रण में करेगा व अपने समय को इन माध्यमों के अधीन व्यर्थ नहीं होने देगा। यह जानकर मेरे मन में एक अजीब सा संतोष था। संतोष के साथ एक विचार था कि उसके जैसे कितने लोग होंगे जो इसी चंगुल में फंसे होंगे। यह आवश्यक नहीं कि हर कोई परीक्षा की तैयारी कर रहा हो परन्तु सोशल मीडिया बड़े स्तर पर लोगों_का समय बर्बाद कर रहा है। इनका उपयोग एक व्यसन की तरह ही है। अलग-अलग व्यक्तियों को अलग-अलग सोशल मीडिया की लत लग चुकी है। रील्स, मीम्स, स्टोरीज यह सब एक अदृश्य चुंबक की तरह हमारे मस्तिष्क को आकर्षित करता है।

आज के समय में मेरा मित्र जिस स्थिति से जूझ रहा था, वही स्थिति असंख्य सामान्य लोग प्रतिदिन झेल रहे हैं। सोशल मीडिया ने संपर्क के साधनों को सरल तो बनाया है, परन्तु जाने-अनजाने में यह एक अदृश्य जाल भी बुन देता है जिसमें व्यक्ति बिना किसी प्रतिरोध के फँसता चला जाता है। दिन की शुरुआत एक साधारण नोटिफिकेशन से होती है और कब वह पूरा ध्यान अपनी ओर खींच लेता है, यह व्यक्ति को तब पता चलता है जब वह दिन के अंत में स्वयं से ही पूछता है "आज मैंने किया क्या?" यही समस्या अधिकांश युवाओं की दिनचर्या का हिस्सा बन चुकी है, विशेषकर उन लोगों की जिन्हें अपने भविष्य के लिए निरंतर और प्रभावी अध्ययन की आवश्यकता होती है।

बहुत से लोग यह मानकर सोशल मीडिया का उपयोग शुरू करते हैं कि यह सिर्फ कुछ मिनटों का मनोरंजन या सुविधा का साधन है, परंतु धीरे-धीरे यह उनकी एक आदत बन जाती है। स्टेटस, रील्स, ग्रुप चैट, मैसेज रिप्लाई ये सारे फीचर व्यक्ति के दिमाग को 'डोपामिन रिवार्ड' देने लगते हैं। कोई स्टेटस लगाकर यह देखना कि किसने देखा, किसने प्रतिक्रिया दी, किसने नहीं दी, यह मनोवैज्ञानिक रूप से व्यक्ति को हर कुछ मिनट में फोन चेक करने के लिए प्रेरित करता है। यह प्रक्रिया बिल्कुल वैसी ही है जैसे मेरा मित्र हर समय अपडेट्स देखने और प्रतिक्रिया देने के लिए प्रेरित होता था। यह न केवल समय व्यर्थ करती है, बल्कि मानसिक एकाग्रता को भी बिखेर देती है।

यही कारण है कि बहुत से सामान्य लोग अपने लक्ष्यों से भटक जाते हैं। उन्हें लगता है कि वे पढ़ तो रहे हैं, पर वास्तव में उनका समय 'टुकड़ों में बंट' चुका होता है—पाँच मिनट पढ़ाई, फिर मैसेज चेक करना; दस मिनट पढ़ाई, फिर स्टेटस देखना। इस तरह एक सतत और गहरी एकाग्रता कभी बन ही नहीं पाती। विद्यार्थियों में तो यह समस्या और भी अधिक दिखती है, क्योंकि पढ़ाई में लगने वाली मानसिक ऊर्जा और समय दोनों ही सोशल मीडिया खींच लेता है। परिणामस्वरूप, व्यक्ति को लगता है कि वह मेहनत तो कर रहा है, पर उसके परिणाम सामने नहीं आ पा रहे।

व्यावसायिक दुनिया में भी सोशल मीडिया का यह प्रभाव उतना ही गहरा है जितना छात्रों या प्रतियोगी परीक्षार्थियों पर। कार्यालयों में कार्यरत अनेक कर्मचारी दिनभर नोटिफिकेशन, ग्रुप चैट, रील्स और अपडेट्स के बीच बार-बार विचलित होते रहते हैं। मीटिंग के दौरान भी मन अनजाने में फोन की ओर खिंच जाता है कि कहीं कोई नया संदेश तो नहीं आया। इससे न केवल उत्पादकता घटती है, बल्कि काम की गुणवत्ता और समय पर कार्य पूरा करने की क्षमता पर भी असर पड़ता है। कई बार कर्मचारी स्वयं यह महसूस करते हैं

कि वे पूरे दिन व्यस्त रहे, लेकिन वास्तविक काम बहुत कम हुआ ठीक वैसे ही जैसे मेरा मित्र पढ़ाई में 'व्यस्त' था, पर 'उत्पादक' नहीं।

इसके अतिरिक्त, व्यावसायिक क्षेत्र में सोशल मीडिया की तुलना करना, दूसरों की उपलब्धियों के स्टेटस देखकर खुद को कम आंकना, या हर पोस्ट पर अपेक्षित प्रतिक्रिया न मिलने पर मानसिक रूप से प्रभावित होना, ये सब आधुनिक ऑफिस कल्चर में सामान्य हो चुका है। इस मनोवैज्ञानिक दबाव के कारण कर्मचारी तनावग्रस्त हो जाते हैं और उनकी एकाग्रता बिखर जाती है। जिस प्रकार मेरा मित्र हर स्टेटस पर दूसरों की प्रतिक्रिया के सहारे स्वयं का मूल्यांकन करने लगा था, ठीक उसी प्रकार अनेक पेशेवर लोग भी अपने आत्मविश्वास को सोशल मीडिया की मान्यता से जोड़ने लगते हैं।

अंततः यह समस्या केवल मेरे मित्र की नहीं है, यह आज की पीढ़ी की सामूहिक चुनौती बन चुकी है। यदि व्यक्ति समय रहते इस चक्रव्यूह को पहचानकर बाहर नहीं निकलता, तो यह धीरे-धीरे उसकी पढ़ाई, करियर, आत्मविश्वास और मानसिक स्वास्थ्य सभी पर प्रभाव डालने लगता है। सोशल मीडिया का संयमित उपयोग आज एक कौशल बन चुका है, और जो व्यक्ति इसे सीख लेता है वही अपने लक्ष्यों की ओर अधिक स्पष्टता और दृढ़ता से बढ़ पाता है।

सोशल मीडिया एप्लिकेशन इतने चतुराई से डिज़ाइन किए गए हैं कि हमारी डोपामिन की भूख हर कुछ सेकेंड में नई सामग्री से तृप्त होती रहती है। हमारा ध्यान, जो पहले किसी एक कार्य पर टिक सकता था, अब पलक झपकते ही एक रील से दूसरे वायरल वीडियो पर कूद जाता है।

निरंतर सोशल मीडिया का उपयोग व स्क्रॉलिंग मस्तिष्क को थकाती है, वह भी बिना किसी रचनात्मक परिणाम के। इसके अतिरिक्त दूसरों का स्टेटस या हाइलाइट रील देखकर अपनी ज़िंदगी की तुलना करना व उसको कमतर मानना एक आम समस्या बन चुका है।

सोशल मीडिया से भागना कोई समाधान नहीं, पर उससे सचेत दूरी बनाना ज़रूरी है। तकनीक का उपयोग हमे हमारी जिंदगी को सरल व बेहतर बनाने के लिए करना चाहिए न की जटिल व दुर्गम।

रचनाकार- संजय गौतम
सहायक प्रशासनिक अधिकारी

नेट ज़ीरो और पर्यावरण संरक्षण

सरकारी कार्यालयों की भूमिका एवं उत्तरदायित्व

1. प्रस्तावना - एक ज़रूरी संकल्प

21वीं सदी में मानवता के सामने जो सबसे बड़ी चुनौती है, वह किसी युद्ध से नहीं, किसी महामारी से नहीं बल्कि उस धीमी, अदृश्य और अटल प्रक्रिया से है जिसे हम जलवायु परिवर्तन कहते हैं। पिछले 150 वर्षों में औद्योगिक क्रांति के बाद से मनुष्य ने जितना कार्बन वायुमंडल में छोड़ा है, उतना पृथ्वी के पिछले हज़ारों वर्षों के इतिहास में नहीं छोड़ा गया। इसका परिणाम है - बढ़ता तापमान, बेमौसम बारिश, सिकुड़ते ग्लेशियर, उफनते समुद्र और बिगड़ते मानसून।

इस संकट से निपटने के लिए दुनिया भर के देशों ने एक महत्वाकांक्षी लक्ष्य तय किया है-'नेट ज़ीरो'। भारत ने भी वर्ष 2070 तक नेट ज़ीरो उत्सर्जन प्राप्त करने का संकल्प लिया है। पर यह संकल्प केवल बड़े कारखानों, उद्योगों या वाहनों तक सीमित नहीं है। इसमें सरकारी कार्यालयों की भूमिका भी उतनी ही महत्वपूर्ण है — शायद और भी अधिक, क्योंकि सरकार न केवल नीति बनाती है, बल्कि समाज के लिए एक आदर्श भी प्रस्तुत करती है।

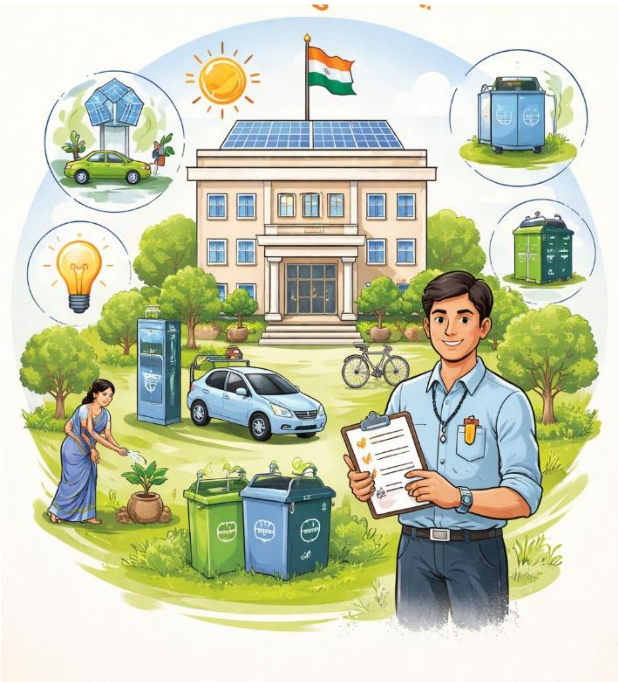

यह लेख इसी विषय को केंद्र में रखकर लिखा गया है। हम समझने का प्रयास करेंगे कि 'नेट ज़ीरो' क्या है, क्यों ज़रूरी है, और इस लक्ष्य को प्राप्त करन में सरकारी कार्यालय क्या-क्या ठोस कदम उठा सकते हैं।

2. नेट ज़ीरो क्या है ?-एक सरल व्याख्या

'नेट ज़ीरो' एक ऐसी स्थिति है जिसमें किसी देश, संगठन या व्यक्ति द्वारा वायुमंडल में छोड़ी जाने वाली ग्रीनहाउस गैसों की मात्रा और वायुमंडल से अवशोषित की जाने वाली मात्रा बराबर हो जाए। सरल शब्दों में-जितना कार्बन छोड़ो, उतना वापस सोख लो। यह 'शून्य उत्सर्जन' से अलग है-नेट ज़ीरो में उत्सर्जन को पूरी तरह बंद करना ज़रूरी नहीं, पर उसे संतुलित करना अनिवार्य है।

नेट ज़ीरो और भारत का संकल्प

वर्ष 2021 में ग्लासगो में आयोजित COP26 सम्मेलन में भारत के प्रधानमंत्री ने भारत की 'पंचामृत' प्रतिबद्धताएँ घोषित कीं, जिनमें प्रमुख हैं :

1. 2030 तक गैर-जीवाश्म ईंधन स्रोतों से 50% विद्युत उत्पादन

2. 2030 तक कार्बन उत्सर्जन में एक अरब टन की कमी
3. 2030 तक GDP की कार्बन तीव्रता में 45% की कमी
4. 2070 तक नेट ज़ीरो उत्सर्जन का लक्ष्य

इन लक्ष्यों को पूरा करने के लिए केवल उद्योग और परिवहन क्षेत्र में परिवर्तन पर्याप्त नहीं होगा। सरकारी क्षेत्र, जो देश की ऊर्जा का एक बड़ा उपभोक्ता है और जिसके अधीन लाखों कर्मचारी और असंख्य भवन हैं, उसे भी इस परिवर्तन में सक्रिय भूमिका निभानी होगी।

ग्रीनहाउस गैसें और उनका प्रभाव

सरकारी कार्यालयों से मुख्यतः निम्नलिखित स्रोतों से ग्रीनहाउस गैसें उत्पन्न होती हैं :

उत्सर्जन स्रोत	अनुमानित योगदान
विद्युत ऊर्जा की खपत (AC, लाइटिंग, कंप्यूटर)	सर्वाधिक — लगभग 45-55%
सरकारी वाहनों का ईंधन उपयोग	25-30%
कागज़ एवं मुद्रण सामग्री	8-12%
जल की बर्बादी एवं अपशिष्ट प्रबंधन	5-8%
यात्रा और आवागमन (हवाई/रेल)	3-5%

यह आँकड़े स्पष्ट करते हैं कि सरकारी कार्यालयों में ऊर्जा प्रबंधन और परिवहन - ये दो क्षेत्र सर्वाधिक ध्यान देने योग्य हैं।

3. सरकारी कार्यालयों की वर्तमान स्थिति

भारत में केंद्र और राज्य सरकारों के कार्यालयों की संख्या लाखों में है। इनमें काम करने वाले कर्मचारियों की संख्या भी करोड़ों में है। ये कार्यालय प्रतिदिन अपार मात्रा में बिजली, पानी, कागज़ और ईंधन का उपयोग करते हैं। एक अनुमान के अनुसार भारत के सरकारी भवन देश की कुल व्यावसायिक ऊर्जा खपत का लगभग 25-30% उपभोग करते हैं।

कुछ चिंताजनक तथ्य :

- अधिकांश सरकारी भवन पुराने हैं और उनमें ऊर्जा-दक्षता के कोई विशेष उपाय नहीं हैं।
- बड़े कार्यालयों में वातानुकूलन (AC) की खपत 24 घंटे होती है, जबकि कार्यालय समय केवल 8-9 घंटे का है।
- सरकारी वाहन बेड़े में अभी भी अधिकांश डीज़ल/पेट्रोल वाहन हैं।
- कागज़ का उपयोग डिजिटलीकरण के बावजूद अत्यधिक है।

4. ऊर्जा प्रबंधन - पहला और सबसे ज़रूरी कदम

सरकारी कार्यालयों में ऊर्जा की बचत नेट ज़ीरो लक्ष्य की दिशा में सबसे प्रभावी और तत्काल उठाया जा सकने वाला कदम है। इसके लिए किसी विशेष तकनीक या बड़े निवेश की आवश्यकता नहीं-केवल जागरूकता, अनुशासन और इच्छाशक्ति चाहिए।

4.1 सौर ऊर्जा : छत का सदुपयोग

सरकारी भवनों की छतें अक्सर खाली पड़ी रहती हैं। इन छतों पर सोलर पैनल लगाकर कार्यालय की दैनिक ऊर्जा ज़रूरतों का एक बड़ा हिस्सा पूरा किया जा सकता है। केंद्र सरकार की 'रूफटॉप सोलर योजना' के अंतर्गत सब्सिडी और सहायता भी उपलब्ध है।

लाभ : एक बार निवेश, 25 वर्ष तक मुफ़्त बिजली। बिजली बिल में 50-70% की कमी। अतिरिक्त ऊर्जा ग्रिड को बेचने का विकल्प।

4.2 LED लाइटिंग और स्मार्ट ऊर्जा प्रबंधन

यदि अभी भी किसी कार्यालय में पुरानी CFL या ट्यूब लाइट लगी हैं, तो उन्हें LED से बदलना पहली प्राथमिकता होनी चाहिए। LED लाइट्स पुरानी बल्बों की तुलना में 60-70% कम बिजली खपत करती हैं और इनकी आयु भी कई गुना अधिक होती है। इससे भी आगे - 'स्मार्ट लाइटिंग सिस्टम' लगाए जा सकते हैं जो ऑक्यूपेंसी सेंसर और डेलाइट हार्वेस्टिंग के माध्यम से स्वयं बिजली की खपत नियंत्रित करते हैं। खाली कमरों में बिजली स्वतः बंद हो जाती है।

4.3 वातानुकूलन (AC) का विवेकपूर्ण उपयोग

कार्यालयों में AC की अनियंत्रित खपत एक बड़ी समस्या है। कुछ सरल नियम अपनाने से इसे काफ़ी कम किया जा सकता है :

- AC का तापमान 24°C से कम न रखें - यह BEE (ब्यूरो ऑफ एनर्जी एफिशिएंसी) की सरकारी अनुशंसा भी है।
- 5-स्टार रेटिंग वाले AC और उपकरण ही खरीदें।
- ग्रीन बिल्डिंग डिज़ाइन अपनाएँ जिसमें प्राकृतिक वायुसंचार पर्याप्त हो।

5. हरित परिवहन — सरकारी वाहन बेड़े का कायाकल्प

सरकारी वाहन बेड़ा देश में कार्बन उत्सर्जन का एक महत्वपूर्ण स्रोत है। केंद्र और राज्य सरकारों के लाखों वाहन प्रतिदिन सड़कों पर चलते हैं। इनमें अभी भी बड़ी संख्या में डीज़ल/पेट्रोल वाहन हैं। इस क्षेत्र में परिवर्तन के लिए कई स्तरों पर प्रयास आवश्यक हैं।

5.1 इलेक्ट्रिक वाहनों की ओर संक्रमण

केंद्र सरकार ने पहले ही निर्देश दिए हैं कि नई वाहन खरीद में प्राथमिकता इलेक्ट्रिक वाहनों को दी जाए। 'FAME India' योजना के अंतर्गत सरकारी वाहनों के विद्युतीकरण को प्रोत्साहन दिया जा रहा है।

5.2 वाहन साझाकरण और विडियो कॉन्फ्रेंसिंग

हर बैठक के लिए सैकड़ों किलोमीटर यात्रा करना अब आवश्यक नहीं है। वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग और डिजिटल बैठकों से न केवल समय और धन की बचत होती है, बल्कि कार्बन उत्सर्जन में भी भारी कमी आती है। कोविड महामारी ने यह सिद्ध कर दिया कि दूरस्थ बैठकें उतनी ही प्रभावी हो सकती हैं।

6. जल संरक्षण और अपशिष्ट प्रबंधन

6.1 वर्षा जल संचयन

जल संकट आज केवल ग्रामीण क्षेत्रों की समस्या नहीं रही-देश के अनेक बड़े शहर और सरकारी परिसर भी जल की कमी से जूझ रहे हैं। सरकारी भवनों में वर्षा जल संचयन प्रणाली लगाना न केवल एक पर्यावरणीय ज़िम्मेदारी है, बल्कि यह आर्थिक रूप से भी लाभकारी है।
सभी सरकारी परिसरों में वर्षा जल एवं जल शुद्धिकरण के अनुपयोगी जल को एकत्र कर भूजल पुनर्भरण (Groundwater Recharge), बागवानी, कार्यालय की साफ-सफाई और शौचालयों में उपयोग किया जा सकता है।

6.2 ठोस अपशिष्ट प्रबंधन

कार्यालयों से प्रतिदिन भारी मात्रा में कचरा उत्पन्न होता है-कागज़, प्लास्टिक, इलेक्ट्रॉनिक उपकरण, भोजन अपशिष्ट। इसके प्रबंधन के लिए :

- सूखा और गीला कचरा अलग-अलग संग्रह करें-यह अपशिष्ट प्रबंधन का पहला और सबसे महत्वपूर्ण कदम है।
- कैंटीन/भोजनालय से निकले जैविक कचरे को खाद (Compost) बनाने में उपयोग करें।
- ई-कचरा (E-waste) जैसे पुराने कंप्यूटर, प्रिंटर, मोबाइल को अधिकृत रीसाइक्लर को दें।
- कार्यालय परिसर में वृक्षारोपण को नियमित और अनिवार्य अभियान बनाएँ।

7. एक आदर्श 'हरित कार्यालय' की कल्पना

आइए एक ऐसे सरकारी कार्यालय की कल्पना करें जो वास्तव में 'हरित' है। यह कोई कल्पना-लोक नहीं है यह एक व्यावहारिक और प्राप्त करने योग्य लक्ष्य है।

यह दृश्य आज के अधिकांश सरकारी कार्यालयों से बहुत अलग है। पर यह असंभव नहीं है। इसके लिए चाहिए नेतृत्व की इच्छाशक्ति, कर्मचारियों की जागरूकता और नीति का दृढ़ क्रियान्वयन।

रचनाकार- राजेन्द्र प्रसाद मीना
सहायक प्रशासनिक अधिकारी

नवभारत की नवदिशा: विकास, चुनौतियाँ और योजना

आधुनिक भारत आज परिवर्तन के एक ऐसे युग में प्रवेश कर चुका है जहाँ परंपरा और आधुनिकता का अनूठा संगम देखने को मिलता है। विज्ञान, तकनीक, शिक्षा और शहरीकरण के प्रभाव से भारत ने पिछले कुछ दशकों में उल्लेखनीय प्रगति की है। आज भारत केवल एक विकासशील देश ही नहीं, बल्कि विश्व मंच पर अपनी एक महत्वपूर्ण पहचान बनाने की ओर अग्रसर है। इस प्रगति के साथ कई चुनौतियाँ भी जुड़ी हुई हैं। इसलिए आधुनिक भारत के लाभ, हानि और उसके भविष्य की संभावनाओं का विश्लेषण अत्यंत आवश्यक हो जाता है।

सबसे पहले यदि हम आधुनिक भारत के लाभों की चर्चा करें, तो तकनीकी विकास इसमें सबसे महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। आज के युग में इंटरनेट, स्मार्टफोन, कंप्यूटर और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस ने जीवन को अत्यंत सरल और सुविधाजनक बना दिया है। डिजिटल क्रांति के कारण अब लगभग हर सेवा ऑनलाइन उपलब्ध हो गई है। बैंकिंग, शिक्षा, स्वास्थ्य और सरकारी सेवाओं तक अब घर बैठे ही पहुँचा जा सकता है। इससे न केवल समय की बचत होती है, बल्कि कार्यों में पारदर्शिता और दक्षता भी बढ़ती है।

शिक्षा के क्षेत्र में भी आधुनिक भारत ने अभूतपूर्व परिवर्तन देखा है। डिजिटल प्लेटफॉर्म, ऑनलाइन क्लासेस और ई-लर्निंग के माध्यम से शिक्षा अब अधिक सुलभ और प्रभावी हो गई है। पहले जहाँ शिक्षा केवल शहरों तक सीमित थी, अब वह ग्रामीण क्षेत्रों के छात्रों तक भी उच्च गुणवत्ता की शिक्षा पहुँच रही है। इससे समाज में ज्ञान का स्तर बढ़ा है और युवाओं में आत्मनिर्भरता की भावना विकसित हुई है।

आर्थिक दृष्टि से भी आधुनिक भारत ने तेजी से प्रगति की है। औद्योगीकरण, स्टार्टअप संस्कृति और विदेशी निवेश के कारण देश की अर्थव्यवस्था मजबूत हुई है। नए-नए उद्योगों और व्यवसायों के कारण रोजगार के अवसरों में वृद्धि हुई है। आज भारत विश्व की प्रमुख अर्थव्यवस्थाओं में अपना स्थान बना रहा है। महिलाओं की भागीदारी भी बढ़ी है, जिससे समाज में समानता और सशक्तिकरण को बढ़ावा मिला है।

स्वास्थ्य सेवाओं के क्षेत्र में भी आधुनिक तकनीकों ने क्रांति ला दी है। उन्नत चिकित्सा उपकरण, बेहतर अस्पतालों और शोध के कारण जटिल बीमारियों का इलाज संभव हो पाया है। टेलीमेडिसिन जैसी सुविधाओं ने दूर-दराज के क्षेत्रों में रहने वाले लोगों को भी स्वास्थ्य सेवाएँ उपलब्ध कराई हैं। इससे लोगों की जीवन प्रत्याशा में वृद्धि हुई है और जीवन स्तर बेहतर हुआ है।

हालाँकि, आधुनिक भारत के विकास के साथ कई समस्याएँ भी उत्पन्न हुई हैं। सबसे बड़ी समस्या पर्यावरण प्रदूषण है। तेज़ी से बढ़ते उद्योग, वाहनों की संख्या और जनसंख्या के कारण वायु, जल और भूमि प्रदूषण में वृद्धि हुई है। इसके परिणामस्वरूप जलवायु परिवर्तन और ग्लोबल वार्मिंग जैसी गंभीर समस्याएँ उत्पन्न हो रही हैं, जो मानव जीवन के लिए खतरा बनती जा रही हैं।

इसके अलावा, आधुनिक जीवनशैली ने लोगों के मानसिक और सामाजिक जीवन को भी प्रभावित किया है। तकनीक पर अत्यधिक निर्भरता के कारण लोग एक-दूसरे से दूर होते जा रहे हैं। सोशल मीडिया के अत्यधिक उपयोग से व्यक्तिगत संबंधों में कमी देखने को मिल रही है। लोग आभासी दुनिया में अधिक समय बिताते हैं, जिससे तनाव, चिंता और अवसाद जैसी समस्याएँ बढ़ रही हैं।

सांस्कृतिक दृष्टि से भी आधुनिकीकरण का प्रभाव स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। पाश्चात्य संस्कृति के प्रभाव के कारण भारतीय परंपराएँ और मूल्य धीरे-धीरे कमजोर होते जा रहे हैं। युवा पीढ़ी अपने संस्कारों और पहचान से दूर होती जा रही है, जो समाज के लिए एक चिंता का विषय है।

परंपराओं से दूर होती जा रही है, जिससे सांस्कृतिक असंतुलन उत्पन्न हो सकता है। यह स्थिति समाज के लिए चिंता का विषय है।

आर्थिक असमानता भी आधुनिक भारत की एक गंभीर समस्या है। जहाँ एक ओर कुछ लोग अत्यधिक संपन्न हो रहे हैं, वहीं दूसरी ओर गरीब वर्ग अपनी मूलभूत आवश्यकताओं के लिए संघर्ष कर रहा है। यह असमानता सामाजिक असंतुलन को बढ़ाती है और विकास की गति को प्रभावित करती है।

यदि हम आधुनिक भारत के भविष्य की बात करें, तो यह अत्यंत उज्ज्वल और संभावनाओं से भरा हुआ है। भारत के पास युवा शक्ति, प्राकृतिक संसाधन और नवाचार की अपार क्षमता है। यदि इन संसाधनों का सही उपयोग किया जाए, तो भारत विश्व में एक अग्रणी राष्ट्र बन सकता है।

भविष्य में भारत को सतत विकास की दिशा में कार्य करना होगा। तकनीकी प्रगति के साथ-साथ पर्यावरण संरक्षण को भी प्राथमिकता देनी होगी। शिक्षा, स्वास्थ्य और रोजगार के क्षेत्रों में संतुलित विकास आवश्यक है। इसके साथ ही, सांस्कृतिक मूल्यों को संरक्षित रखते हुए आधुनिकता को अपनाना होगा।

सरकार और समाज दोनों को मिलकर प्रयास करना होगा ताकि विकास का लाभ समाज के हर वर्ग तक पहुँच सके। डिजिटल तकनीक का उपयोग करते हुए सुविधाओं को बढ़ावा देना चाहिए, लेकिन यह भी ध्यान रखना होगा कि इससे मानव मूल्यों का ह्रास न हो। यदि भारत अपनी विविधता, संस्कृति और मूल्यों को बनाए रखते हुए आगे बढ़ता है, तो उसका भविष्य निश्चित रूप से उज्ज्वल होगा।

आधुनिक भारत में संसाधनों की कमी एक गंभीर चुनौती है जो देश के विकास की गति को प्रभावित करती है। बढ़ती जनसंख्या, शहरीकरण और जलवायु परिवर्तन ने इस समस्या को और अधिक जटिल बना दिया है।

आधुनिक भारत में संसाधनों की कमी के मुख्य पहलू निम्नलिखित हैं—

1. जल संकट- भारत में दुनिया की लगभग 18% जनसंख्या निवास करती है, लेकिन वैश्विक जल संसाधनों का केवल 4% ही यहाँ उपलब्ध है। भूजल का गिरता स्तर: कृषि और उद्योगों में अत्यधिक दोहन के कारण भूजल स्तर तेजी से नीचे जा रहा है। नदियाँ: उद्योगों और अन्य जल स्रोत औद्योगिक कचरे के कारण प्रदूषित हो रहे हैं, जिससे पीने योग्य पानी की भारी कमी हो रही है।

2. ऊर्जा संसाधन-भारत अपनी ऊर्जा जरूरतों के लिए अभी भी काफी हद तक जीवाश्म ईंधन (कोयला और पेट्रोलियम) पर निर्भर है। तेल के आयात पर निर्भरता: कच्चे तेल के लिए भारत विदेशों पर निर्भर है, जिससे अर्थव्यवस्था पर बोझ पड़ता है। बढ़ती मांग: औद्योगिकीकरण और डिजिटल क्रांति के कारण बिजली की मांग आपूर्ति से कहीं अधिक है।

3. कृषि योग्य भूमि की कमी-बढ़ते शहरीकरण और बुनियादी ढांचे (सड़क, उद्योग) के निर्माण के कारण उपजाऊ भूमि लगातार कम हो रही है। मृदा क्षरण: रासायनिक उर्वरकों के अत्यधिक उपयोग से मिट्टी की उर्वरता कम हो रही है, जिससे भविष्य में खाद्य सुरक्षा का संकट पैदा हो सकता है।

4. बुनियादी ढांचा और स्वास्थ्य सेवाएँ-जनसंख्या के अनुपात में आधुनिक सुविधाओं की भारी कमी है। स्वास्थ्य: ग्रामीण इलाकों में उचित स्वास्थ्य सुविधाओं, डॉक्टरों और अस्पतालों की कमी है। शिक्षा: गुणवत्तापूर्ण शिक्षा और कौशल विकास के केंद्रों की कमी के कारण मानव संसाधन का पूरा उपयोग नहीं हो पा रहा है।

5. डिजिटल विभाजन-आधुनिक भारत में डेटा और इंटरनेट एक महत्वपूर्ण संसाधन हैं। हालाँकि भारत तेजी से डिजिटल हो रहा है, फिर भी ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों के बीच तकनीकी पहुँच में एक बड़ा अंतर है, जो विकास के समान वितरण में बाधा है।

समाधान के उपाय- संसाधनों की इस कमी को दूर करने के लिए कुछ महत्वपूर्ण कदम उठाए जा सकते हैं:
सतत विकास-संसाधनों का इस तरह उपयोग करना कि भविष्य की पीढ़ियों के लिए भी वे बचे रहें।
नवीकरणीय ऊर्जा-सौर ऊर्जा, पवन ऊर्जा और ग्रीन हाइड्रोजन पर ध्यान केंद्रित करना।
जल संरक्षण-वर्षा जल संचयन को अनिवार्य बनाना।
तकनीकी नवाचार-कम संसाधनों में बेहतर उत्पादकता के लिए आधुनिक तकनीक (जैसे ड्रिप सिंचाई) का उपयोग करना।

अंततः, यह कहा जा सकता है कि आधुनिक भारत अवसर और चुनौती दोनों का संगम है। यह हमारे ऊपर निर्भर करता है कि हम इन अवसरों का किस प्रकार उपयोग करते हैं और चुनौतियों का सामना कैसे करते हैं। सही दिशा, संकल्प और जागरूकता के साथ भारत न केवल अपने नागरिकों के जीवन को बेहतर बना सकता है, बल्कि विश्व में एक आदर्श राष्ट्र के रूप में स्थापित हो सकता है। आधुनिक भारत के समग्र विकास के लिए आवश्यक है कि हम तकनीकी प्रगति के साथ-साथ सामाजिक, आर्थिक और पर्यावरणीय संतुलन बनाए रखें।

रचनाकार- हेमंत
स्टेनोग्राफर

कार्यालय गतिविधियों
की
झलक

संस्थान में आयोजित 77वें गणतंत्र दिवस समारोह 2026 की झलकियाँ

साइबर सुरक्षा एवं जागरूकता कार्यशाला

कार्यालय के मनोरंजन क्लब द्वारा संकाय सदस्य के विदाई समारोह का आयोजन

मनोरंजन क्लब द्वारा 11वें अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस 2025-26 के उपलक्ष्य में योग कार्यक्रम का आयोजन

आयुर्वेद स्वास्थ्य शिविर का आयोजन

कार्यालय में जन्मदिन समारोह की झलक

स्वच्छता एवं हरियाली हेतु पौधारोपण अभियान